ई-दृष्टि नवत्र

2024
प्रिलिम्स स्पेशल

सामान्य अध्ययन 4

(सार-संग्रह)

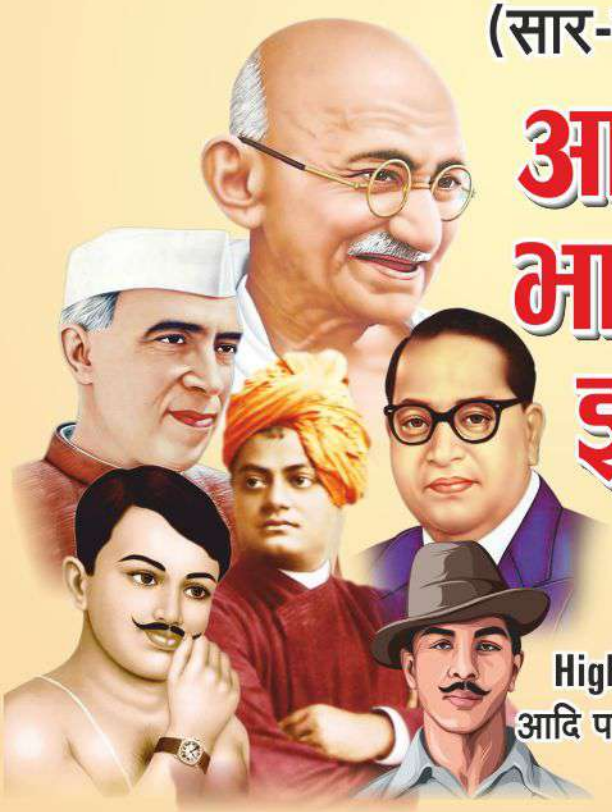

आधुनिक भारत का इतिहास

(UPPCS, UPSSSC,
Railway, SSC,
High Court, UPSI, Police
आदि परीक्षाओं हेतु भी उपयोगी)

© प्रकाशकाधीन :
संस्करण - द्वितीय
संस्करण वर्ष- 2024
ले.- SSGC
मूल्य : 120/-
मुद्रक - श्रीजी प्रिन्टिंग प्रेस
मुद्रण क्रम - प्रथम
संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002

Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-
- **चंचल कुमार तिवारी**
- **सुधाकर तिवारी**
- **धर्मेन्द्र मिश्रा**
- **ज्ञान प्रकाश**
- **आदेश पाण्डेय**
- **कैज़ुल इस्लाम अंसारी**
- **संजीव दास गुप्ता**

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ संख्या
1. यूरोपीय कंपनियों का आगमन	3 - 9
2. मुगल साम्राज्य का पतन तथा विघटन	10 - 18
3. नवीन स्वायत्त राज्यों का उदय	19 - 27
4. मराठा साम्राज्य	28 - 36
5. भारत पर ब्रिटिश अधिकार	37 - 47
6. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार	48 - 53
7. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक नीतियां, प्रशासनिक ढांचा एवं सामाजिक, सांस्कृतिक नीतियां	54 - 68
8. सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण में प्रमुख व्यक्तित्वों का योगदान	69 - 75
9. 1857 का महाविद्रोह	76 - 85
10. प्रमुख भारतीय जन विद्रोह (किसान एवं जनजातीय आंदोलन)	86 - 96
11. 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन	97 - 106
12. आधुनिक शिक्षा एवं प्रेस का योगदान	107 - 116
13. ब्रिटिश कंपनी का संवैधानिक विकास	117 - 126
14. कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएं	127 - 131
15. भारत का स्वतंत्रता आंदोलन प्रथम चरण : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885 - 1905)	132- 138
16. भारत का स्वतंत्रता आंदोलन द्वितीय चरण : (1905 - 1919)	139 - 144
17. क्रांतिकारी आंदोलन	145 - 154
18. राष्ट्रीय आंदोलन का तीसरा चरण : गांधीवादी चरण : (1919 - 1927 ई.)	155 - 170
19. राष्ट्रीय आंदोलन का अंतिम चरण : भाग - II : (1927-1947 ई.)	171 - 213
20. भारत के गवर्नर जनरल एवं संबंधित तथ्य	214 - 221
21. स्वातंत्र्योत्तर भारत (1947 - 1964 ई.)	222 - 240
22. विविध	241 - 256

1 यूरोपीय कंपनियों का आगमन

भूमिका

प्राचीन काल से ही भारत का व्यापारिक संबंध दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों और पश्चिमी एशिया के विभिन्न भागों के साथ-साथ यूरोप के कुछ हिस्सों से था। 15-16वीं सदी के दौरान **जहाजरानी निर्माण** और **नौपरिवहन विज्ञान** में महान प्रगति हुई। यूरोप के पुनर्जागरण ने वहां के लोगों में उद्यम की एक भावना पैदा कर दी। **पुर्तगालियों** और **स्पेनवासियों** ने भौगोलिक खोजों का युग आरंभ किया।

पुर्तगाल के नाविक **बार्थोलोम्यू डियास (Bartolomeu Dias)** ने **1488 ई.** में **उत्तमाशा अंतरीप (केप ऑफ गुड होप)** को खोज निकाला, जिसे उसने **तूफानी अंतरीप** कहा। 1492 ई. में स्पेन के निवासी **कोलंबस** ने भारत पहुंचने का मार्ग खोजते हुए **अमेरिका** की खोज की।

1498 ई. में पुर्तगाली व्यापारी **वास्कोडिगामा** ने **उत्तमाशा अंतरीप** का चक्कर काटकर भारत तक पहुंचने में सफलता पाई।

इन समस्त खोजों का एकमात्र उद्देश्य **व्यापारिक मार्गों की जानकारी प्राप्त करना** एवं **आर्थिक लाभ कमाना** था।

समुद्री यात्री		देश
• **वास्कोडिगामा**	—	**पुर्तगाल**
• **क्रिस्टोफर कोलम्बस**	—	**स्पेन**
• **कैप्टन कुक**	—	**ग्रेट ब्रिटेन**
• **एबेल तस्मान**	—	**हॉलैंड**

यूरोपियों के आगमन का क्रम–

पुर्तगाली → डच → अंग्रेज → डेनिश → फ्रांसीसी

पुर्तगालियों का आगमन

उत्तमाशा अंतरीप का चक्कर काटते हुए **अहमद इब्न मजीद** नामक गुजराती पथप्रदर्शक की सहायता से मई, 1498 में वास्कोडिगामा कालीकट के बंदरगाह पहुंचा। कालीकट के शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया।

वास्कोडिगामा ने कालीकट के राजा से एक बड़ा व्यापारिक लाभ प्राप्त किया, जिसका अरबी व्यापारियों ने विरोध किया। विरोध का मुख्य कारण व्यापारियों का स्वयं का आर्थिक हित था।

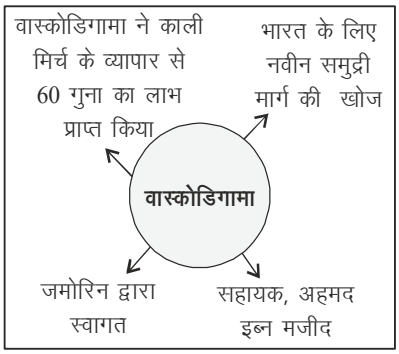

वास्कोडिगामा जिन भारतीय मसालों को लेकर अपने देश पुर्तगाल लौटा, वह पूरी यात्रा व्यय के **60 गुना** से अधिक कीमत पर बिका। वस्तुतः इसी लाभकारी घटना ने पुर्तगाली व्यापारियों तथा साथ ही अन्य यूरोपीय व्यापारियों को भारत आने के लिए आकर्षित किया।

1500 ई. में **'पेड्रो अल्वारेज कैब्रॉल'** के नेतृत्व में **द्वितीय पुर्तगाली अभियान** भारत आया।

1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया।

1505 ई. में (केरल पर्यटन की वेबसाइट

के अनुसार **कन्नूर केरल**) पुर्तगालियों ने दूसरी फैक्ट्री बनाई।

प्रमुख पुर्तगाली वायसराय

फ्रांसिस्को डी अल्मीडा

1505 ई. में फ्रांसिस्को डी अल्मीडा को वायसराय/गवर्नर नियुक्त किया गया तथा पदभार ग्रहण करने वाला वह पहला गवर्नर था। अल्मीडा का मूल उद्देश्य शांतिपूर्वक व्यापार करना था। इसके लिए उसने मजबूत सामुद्रिक नीति का संचालन किया, उसकी यह नीति **ब्लू वॉटर पॉलिसी** (नीले जल की नीति) या **शांत जल की नीति** कही जाती है।

1508 ई. में **चौल के युद्ध** में वह संयुक्त मुस्लिम नौसैनिक बेड़े (मिस्र के ममलूक सुल्तान, कालीकट के जमोरिन तथा गुजरात के शासक महमूद बेगड़ा की संयुक्त सेना) से परास्त हुआ; परंतु अगले ही वर्ष दीव के युद्ध में अल्मीडा ने इस संयुक्त बेड़े को पराजित भी किया। उसकी इस जीत से हिंद महासागर में पुर्तगालियों की पकड़ मजबूत हुई।

अफोंसो डी अल्बुकर्क (1509-1515 ई.)

इसे भारत में **'पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक'** कहा जाता है। वह 1509 ई. में वायसराय बनकर भारत आया। इसने अल्मीडा की शांत जल की नीति का अंत किया। **इसने अपने क्षेत्र में सती प्रथा पर रोक लगाई।**

उल्लेखनीय है कि अफोंसो डी अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों के भारत में प्रथम दुर्ग (भारत में प्रथम यूरोपीय दुर्ग भी) का निर्माण 1503 ई. में **'कोचीन'** में कराया।

1510 ई. में इसने बीजापुर के शासक **यूसुफ आदिल शाह** से गोवा छीन लिया, यहां से पुर्तगाली साम्राज्य की नींव पड़ी।

अल्बुकर्क भारत में स्थायी पुर्तगाली आबादी बसाना चाहता था। इसके लिए उसने **पुर्तगालियों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिए** प्रोत्साहित किया। 1515 ई. में इसकी मृत्यु हुई। उस समय तक पुर्तगाली हिंद महासागर क्षेत्र की सबसे बड़ी शक्ति बन चुके थे।

नूनो-डा-कुन्हा (1529-1538 ई.)

इसने 1530 ई. में कोचीन की जगह **गोवा** को पुर्तगालियों की राजधानी बनाया। इसने मद्रास के सेंटटोमे (संथोमे) तथा हुगली में पुर्तगाली बस्तियां बसाईं। इससे भारत के पूर्वी समुद्री तट की ओर पुर्तगाली वाणिज्य का विस्तार हुआ। गुजरात के शासक बहादुर शाह की हत्या कर 1534 ई. में बसीन तथा 1535 ई. में दीव पर अधिकार कर लिया।

धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने हिंद महासागर में

परीक्षावलोकन

- 'नीला जल योजना' (ब्लू वॉटर पॉलिसी) से संबंधित है **— द अल्मीडा**
- वास्कोडिगामा, कालीकट तट पर पहुंचा **— 1498 ई. में**
- पुर्तगाली उपनिवेश का प्रथम वायसराय भारत में था **— फ्रांसिस्को डी अल्मीडा**
- वास्कोडिगामा का कालीकट में स्वागत किया था **— जमोरिन ने**
- भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक था **— अल्बुकर्क**
- पुर्तगालियों ने भारत में प्रथम दुर्ग का निर्माण किया था **— कोचीन में**
- मध्य काल में सर्वप्रथम भारत से व्यापार संबंध स्थापित करने वाले थे **— पुर्तगाली**
- भारत में प्रथमतः सामुद्रिक व्यापारिक केंद्र स्थापित किया **— पुर्तगालियों ने**

परीक्षावलोकन

- द्वितीय पुर्तगाली अभियान का नेतृत्वकर्ता कौन था?
  –पेड्रो अल्वारेज कैब्रॉल (1500 ई.)
- पुर्तगालियों की पहली फैक्ट्री स्थापित हुई
  –कोचीन (1503 ई.)
- पुर्तगालियों की पूर्व के साथ व्यापार करने की कंपनी का नाम **–एस्तादो द इंडिया**
- कौन-से भारतीय क्षेत्र वर्ष 1961 तक पुर्तगाली अधिकार में रहे? **–गोवा, दमन, दीव**
- पुर्तगालियों ने सर्वप्रथम अपना उपनिवेश कहां स्थापित किया? **–पांडिचेरी**
- वह अंग्रेज अधिकारी जिसने पुर्तगालियों को स्वाल्ली के स्थान पर हराया**–थॉमस बेस्ट ने**

होने वाले व्यापार पर एकाधिकार कर लिया और **कार्टेज पद्धति** लागू की, जो एक प्रकार का लाइसेंस था।

यह **लाइसेंस** यह इंगित करता था कि हिंद महासागर में किसी को भी व्यापार हेतु पुर्तगालियों को एक विशेष प्रकार का शुल्क देना होगा।

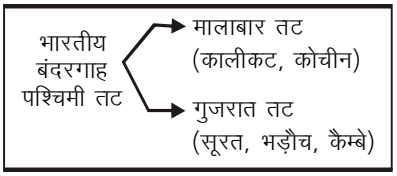

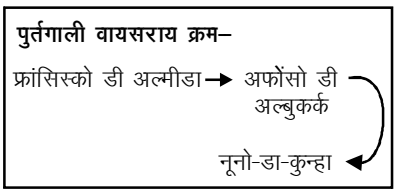

पुर्तगालियों ने फारस की खाड़ी, होरमुज संधि और हिंद महासागर में अपनी चौकियां स्थापित कीं। भारत का जापान के साथ व्यापारिक संबंधों का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है।

पुर्तगालियों के आगमन से भारत में **तंबाकू, आलू, टमाटर की खेती, जहाज निर्माण** तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई. में स्थापित) की शुरुआत हुई। स्थापत्य कला में गोथिक कला का विकास भी पुर्तगालियों की देन है।

पुर्तगाली साम्राज्य : पतन के कारण

- ☞ कट्टर धार्मिक नीति
- ☞ भारतीय व्यापारियों के साथ बर्बरता भरा रवैया
- ☞ स्पेन का 1580 ई. में पुर्तगाल पर अधिकार
- ☞ अंग्रेजी एवं डच नौसेनाओं की बढ़ती शक्ति
- ☞ मराठों तथा मुगलों का शक्तिशाली साम्राज्य

1661 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स II से हो गया, जिससे बंबई क्षेत्र ब्रिटिशों को दहेज के तौर पर दे दिया गया तथा बाद में ब्रिटिश शासन द्वारा संपूर्ण बंबई को **10 पाउंड वार्षिक** किराए पर **ईस्ट इंडिया कंपनी** को दे दिया गया। अंततः पुर्तगालियों की उपनिवेश संबंधी गतिविधियां पश्चिम की तरफ उन्मुख हो गईं।

डचों का आगमन

16वीं शताब्दी के मध्य से डच, भारत और पूर्वी जगत में प्रवेश करने के लिए एक उपयुक्त मार्ग की खोज के लिए प्रयासरत थे। पुर्तगालियों के पश्चात डचों का आगमन हुआ। डच, हालैंड (वर्तमान नीदरलैंडस) के निवासी थे। पहला डच अभियान 1596 ई. में **कार्नेलिस डे हाउटमैन** के नेतृत्व में पूर्वी जगत में पहुंचा।

1602 ई. में विभिन्न डच कंपनियों को मिलाकर **वेरिंगदे ओस्त इंडसे कंपनी (VOC)** नामक एक बड़ी व्यापारिक कंपनी की स्थापना की गई। इस कंपनी को डच सरकार द्वारा अगले 21 वर्षों के लिए भारत और पूर्वी जगत के साथ व्यापार करने, युद्ध, संधि और किलेबंदी का अधिकार दे दिया गया।

प्रारंभ में डचों की गतिविधियां **मसालों के व्यापार तक सीमित** थीं, जिसका मुख्य केंद्र इंडोनेशिया था। जब भारत के साथ इनका संपर्क हुआ, तब इन्होंने व्यापार में **सूती वस्त्रों के व्यापार को भी शामिल** किया, जिससे इन्हें अत्यधिक लाभ मिला।

1605-06 ई. में पूर्वी तट पर मसूलीपट्टनम में **पहली डच फैक्ट्री** की स्थापना की गई।

दूसरी डच फैक्ट्री की स्थापना पोत्तोपोली (निजामपट्टनम) में हुई।

1610 ई. में चंद्रगिरि के राजा के साथ हुए समझौते के तहत, पुलिकट में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना की और इसे अपना मुख्यालय बनाया।[1] यहां पर डचों ने अपने सिक्के भी ढाले।

1653 ई. में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्री स्थापित की।

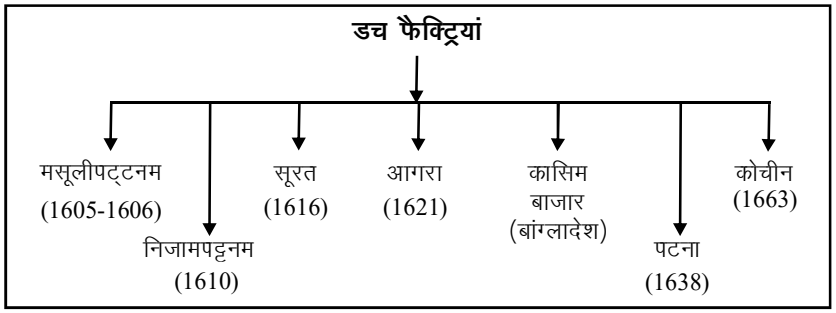

डचों की अधिकांश व्यापारिक गतिविधियां पूर्वी एशिया (मुख्यतः इंडोनेशिया) से जुड़ी थीं; इसलिए इनकी **ज्यादातर फैक्ट्रियां पूर्वी तट** पर बनीं।

परीक्षावलोकन

- ब्रिटिश कंपनियों में से भारत में स्थल मार्ग से व्यापार करने का पहला अधिकार-पत्र 1593 ई. में प्राप्त हुआ था — **लीवेंट कंपनी को**
- लंदन में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के गठन के समय भारत का बादशाह था — **अकबर**
- वह मुगल सम्राट जिसके शासनकाल में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में सर्वप्रथम कारखाना स्थापित किया — **जहांगीर के**
- सूरत, सतारा, बॉम्बे, पणजी में से ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रारंभिक वेस्टर्न प्रेसीडेंसी थी — **सूरत में**
- भारत में 1613 ई. में अंग्रेजों ने अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की थी — **सूरत में**

डचों द्वारा भारत से निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तुओं में उत्तर व मध्य भारत से **नील** व **कच्चा रेशम**; **बिहार व बंगाल से शोरा** व **नमक** शामिल था। **भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय** डचों को दिया जाता है।

☞उल्लेखनीय है कि डचों ने भारत में पुर्तगालियों को समुद्री व्यापार से तो निष्कासित कर दिया; परंतु अंग्रेजों की नौसैनिक शक्ति के आगे टिक नहीं सके।

☞1759 ई. में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य **बेदरा** का युद्ध (इसे **चिनसुरा** या हुगली का युद्ध भी कहा जाता है) हुआ। इस युद्ध में डचों की पराजय हुई।

☞बेदरा के युद्ध के पश्चात डचों की सैन्य शक्ति का भारत में अंततः पतन हो गया।

☞बेदरा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव द्वारा किया गया था।

(1) 1609 का इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया

डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था, जिससे कंपनी अपनी इच्छानुसार विस्तार नहीं कर सकती थी, जो कंपनी के पतन का मुख्य कारण बना।

अंग्रेजों का आगमन

सितंबर, 1599 में लंदन में कुछ व्यापारियों ने पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के लिए **''गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग विद द ईस्ट इंडीज''** नामक कंपनी का प्रस्ताव ब्रिटिश क्राउन को भेजा।

हालांकि, प्रिवी काउंसिल द्वारा इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि एक वर्ष पश्चात इन व्यापारियों ने कंपनी की संरचना का पुनर्गठन करके पुनः प्रस्ताव भेजा। इस बार ब्रिटिश क्राउन की अनुमति प्राप्त हो गई।

इस प्रकार ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना का प्रयास 1599 ई. से प्रारंभ हो गया; परंतु उसे **मूर्त रूप दिसंबर, 1600 में प्रदान किया** गया।[2]

परीक्षावलोकन

- कंपनी की पहली फैक्ट्री कहां खोली गई? **–सूरत (1608)**
- कैप्टन हॉकिंस व सर टॉमस रो ने किस मुगल शासक से व्यापारिक फरमान प्राप्त किए? **–मुगल शासक जहांगीर**
- कलकत्ता शहर की नींव रखी **–जॉब चारनॉक**
- 1700 ई. में पहला प्रेसीडेंसी नगर घोषित किया गया **–कलकत्ता**
- किस मुगल शासक ने अंग्रेजों से जजिया कर की वसूली की? **–औरंगजेब**
- फोर्ट विलियम का पहला प्रेसीडेंट किसे नियुक्त किया गया? **–सर चार्ल्स आयर**
- सर विलियम नॉरिस के नेतृत्व में नॉरिस मिशन किस वर्ष भारत आया? **–1698 ई.**

1600 ई. में इस कंपनी को इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम से एक आज्ञा-पत्र मिला, जिसके तहत कंपनी को अगले 15 वर्षों के लिए पूर्वी देशों से व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया गया।

विदित हो कि यह अधिकार **1688 ई. में हुई इंग्लैंड की क्रांति** (श्वेत क्रांति) तक बना रहा। इस क्रांति के फलस्वरूप संसद की सर्वोच्चता स्थापित हुई और 1694 ई. में ब्रिटिश संसद के एक प्रस्ताव द्वारा सभी नागरिकों को पूर्व के साथ व्यापार करने की छूट दी गई।

ईस्ट इंडिया कंपनी का उदय एवं विस्तार

'ईस्ट इंडिया कंपनी' अंग्रेजी क्राउन की अनुमति के पश्चात द्रुत गति से विस्तारित होने लगी। इसके संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को दरेखना अति आवश्यक है -

- ईस्ट इंडिया कंपनी एक ज्वाइंट स्टॉक कंपनी थी, जिसका कार्यभार निजी निवेशकों के हाथों में था।
- हालांकि, ब्रिटिश क्राउन कंपनी की व्यापारिक गतिविधियों में तो हस्तक्षेप नहीं करता था; परंतु विदेशी राजनयिक मुद्दों (Foreign Diplomatic Matters) पर ब्रिटिश क्राउन का स्पष्ट दखल था।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुख्य प्रतिस्पर्धी थी - डच ईस्ट इंडिया कंपनी। हालांकि, डचों को परास्त कर ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।
- **ब्रूस ब्रंटन (Bruce Brunton)** द्वारा लिखे गए एक लेख **''द ईस्ट इंडिया कंपनी : एजेंट ऑफ एंपायर इन द अर्ली मॉडर्न कैपिटलिस्ट एरा''** में यह इंगित किया गया

(2) The journal of the Society of Art. 1879 (pages 216-219)

परीक्षावलोकन

- बंगाल की बांदेल, चिनसुरा, हुगली तथा श्रीरामपुर फैक्ट्रियों में से जो डचों द्वारा स्थापित की गई थीं
  — हुगली एवं चिनसुरा
- पांडिचेरी के संदर्भ में सही कथन है-
  — पांडिचेरी पर कब्जा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थे
- हुगली को बंगाल की खाड़ी में समुद्री लूटपाट के लिए अड्डा बनाया था
  — पुर्तगालियों ने
- कलकत्ता का संस्थापक था
  — जॉब चारनॉक
- 1708 ई. में किन दो कंपनियों का विलय हुआ- **ईस्ट इंडिया कंपनी एवं इंग्लिश कंपनी ट्रेडिंग इन द ईस्ट**
- भारत के साथ व्यापार के लिए सर्वप्रथम संयुक्त पूंजी कंपनी आरंभ करने वाले लोग थे **— ब्रिटेन के**

है कि 1660 से 1690 ई. के बीच एशिया में ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार लगभग **300 गुना** बढ़ गया।

☞ 1708 ई. में दो कंपनियों - ईस्ट इंडिया कंपनी तथा इसकी प्रतिस्पर्धी कंपनी का विलय हुआ एवं एक नई कंपनी अस्तित्व में आई - **यूनाइटेड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ इंग्लैंड ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज।**

कालांतर में 1833 ई. के चार्टर द्वारा इसका संक्षिप्त नाम **'ईस्ट इंडिया कंपनी'** कर दिया गया।

कंपनी की व्यापारिक गतिविधियां

कैप्टन हॉकिंस के नेतृत्व में हेक्टर नामक पहला अंग्रेजी जहाज 1608 ई. में सूरत बंदरगाह पर पहुंचा। कंपनी ने कैप्टन हॉकिंस को जहांगीर के दरबार में भेजा, परिणामस्वरूप एक शाही फरमान द्वारा सूरत में फैक्ट्री खोलने की इजाजत मिली। हालांकि, इसकी **स्थापना 1613 ई.** में हुई।

1615 ई. में सर टॉमस रो, एक व्यापारिक संधि करने के उद्देश्य से जहांगीर के दरबार में आया। इसने मुगल साम्राज्य के सभी भागों में व्यापार करने एवं फैक्ट्रियां स्थापित करने का अधिकार-पत्र प्राप्त किया।

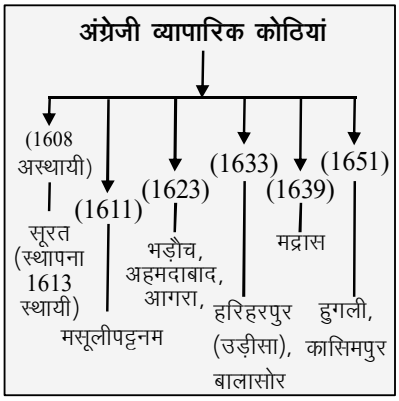

फ्रांसिस डे ने 1639 ई. में चंद्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर लिया, जहां बाद में एक किलेबंद कोठी बनाई गई। इसी कोठी को **फोर्ट सेंट जॉर्ज** नाम दिया गया।

1668 ई. में कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बंबई प्राप्त किया तथा कालांतर में पश्चिमी तट की महत्ता को देखते हुए बंबई को कंपनी का मुख्यालय बनाया गया।

1686 ई. में कंपनी का संघर्ष मुगलों से हुआ; परंतु अंग्रेजों द्वारा माफी मांगने पर औरंगजेब से उन्हें डेढ़ लाख रुपया मुआवजा के बदले खो चुके व्यापारिक अधिकार मिले।

कालांतर में मुगल शासकों की कमजोर अवस्था का लाभ उठाकर तथा क्षेत्रीय भारतीय राज्यों को आपसी संघर्षों में उलझाकर कंपनी ने अपने लिए एक नए साम्राज्य की नींव रखी।

परीक्षावलोकन

- फ्रांसीसियों की पहली कोठी कहां स्थापित हुई? **–सूरत (1668 ई.)**
- 'पांडिचेरी' की स्थापना का श्रेय किसे दिया जाता है? **–फ्रांसीसियों को**
- कर्नाटक का युद्ध किस-किस के बीच हुआ? **–अंग्रेज-फ्रांसीसी**
- फोर्ट ओरलिएंस कहां स्थित है? **–चंद्रनगर (कलकत्ता)**
- किस फ्रांसीसी गवर्नर के नेतृत्व में फ्रांसीसी औपनिवेशिक गतिविधियों की शुरुआत हुई? **–डूप्ले**
- सत्रहवीं शताब्दी के पहले चतुर्थांश (1625 ई.) तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने कारखाने स्थापित कर लिए थे **— सूरत, भड़ौच, बुरहानपुर, अहमदाबाद और आगरा में**
- वह अंग्रेज अधिकारी जिसने पुर्तगालियों को स्वाल्ली (Sowlley) के स्थान पर हराया था **— थॉमस बेस्ट ने**
- यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों में से सूरत में सर्वप्रथम अपना कारखाना स्थापित किया **— अंग्रेजों ने**

डेनिश व्यापारी

अन्य यूरोपीय शक्तियों की तरह डेनिश भी **1616 ई.** में भारत आए। ये **डेनमार्क** के निवासी थे। डेनिशों ने अपनी पहली फैक्ट्री 1620 ई. तंजौर जिले के **ट्रैंकोबार** में तथा दूसरी फैक्ट्री 1676 ई. में बंगाल के **सेरामपुर** में स्थापित की।

डेनिश, भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने में सफल नहीं हुए और 1845 ई. तक आते-आते अपनी फैक्ट्रियां अंग्रेजों को बेचकर चले गए।

फ्रांसीसियों का आगमन

फ्रांसीसी सबसे अंतिम यूरोपीय शक्तियों में से थे, जो भारत में आए। 1664 ई. में फ्रांसीसी सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कोलबर्ट के प्रयास से फ्रांसीसी व्यापारिक कंपनी **फ्रांसेस देस इंडेस ओरिएंटलेस** (Compagnie Francaise Des Indes Orientals) की स्थापना हुई। इस कंपनी का पूर्ण स्वामित्व फ्रांसीसी सरकार के हाथों में ही था।

फ्रांसीसियों ने अपनी पहली फैक्ट्री 1668 ई. में सूरत में स्थापित की तथा अगले वर्ष गोलकुंडा के सुल्तान से अधिकार-पत्र लेकर 1669 ई. में **मसूलीपट्टनम** में अपनी दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।

1673 ई. में वालिकोंडापुरम के सूबेदार शेर खान लोदी से एक गांव लेकर वहां एक किलेबंद फ्रांसीसी बस्ती बसाई, जिसे बाद में **पांडिचेरी** नाम दिया गया।

1674 ई. में फ्रांसीसियों ने बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खान से एक जगह किराए पर ली। यहां उन्होंने 1690 ई. तक एक फ्रांसीसी कोठी का निर्माण शुरू किया, जिसे **चंद्रनगर की कोठी** कहा गया।

व्यापारिक गतिविधियों से लाभ कमाने के साथ-साथ फ्रांसीसियों की महत्वाकांक्षाएं बढ़ती जा रही थीं। इसी दौरान फ्रांसीसी गवर्नर **डूप्ले** ने भारतीय राजाओं की आंतरिक नीतियों में हस्तक्षेप करके आगामी संघर्षों की शुरुआत की। जिसके तीन धड़े बने–फ्रांसीसी, अंग्रेज और भारतीय राज्य। परिणामस्वरूप फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच युद्धों की एक शृंखला की शुरुआत हुई, जिसे **कर्नाटक युद्ध** भी कहा जाता है।

2 मुगल साम्राज्य का पतन तथा विघटन

भूमिका

इतिहास के एक दौर में मुगल साम्राज्य ने अपने विस्तृत साम्राज्य से पूरी दुनिया को आश्चर्य चकित कर दिया था। मुगल साम्राज्य के विघटन का प्रारंभ औरंगजेब (1657 - 1707) के काल से ही प्रारंभ हो गया था। उत्तरवर्ती मुगल शासकों के काल में यह गति और तीव्र हो गई।

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात उसके तीनों बेटों (**मुअज्जम, आजम तथा कामबक्श**) के बीच गद्दी के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में 65 वर्षीय **मुअज्जम (बहादुर शाह)** विजयी रहा।

उत्तराधिकार के लिए संघर्ष (The War of Succession)

- ☞ औरंगजेब की मृत्यु का समाचार सुनकर सबसे पहले मुहम्मद आजम अहमदनगर पहुंचा। उसने औरंगजेब का अंतिम संस्कार पूर्ण करने के बाद **मार्च, 1707 में सभी अमीर, उमराओं के समक्ष अपने आपको बादशाह घोषित किया।**
- ☞ बादशाह घोषित करते समय आजम खान को सभी प्रमुख अमीरों का समर्थन प्राप्त था। विशेष रूप से **औरंगजेब के वजीर असद खान ने आजम का समर्थन किया था।**
  - ➲ विदित हो कि औरंगजेब के शासन के अंतिम वर्षों में पुराने सामंतों की परंपरा में केवल असद खान बचा था, जिसके विषय में औरंगजेब ने कहा था कि **''असद खान से बेहतर वजीर न है, न कोई होगा।''**
- ☞ औरंगजेब के **पुत्र मुअज्जम, जो काबुल का सूबेदार था, उसे अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिला। उस समय वह पेशावर के पास जमरूद में था।**
- ☞ **मुहम्मद मुअज्जम आगरा के लिए रवाना हुआ तथा पुल-ए-शाहदौला पहुंचा, जहां उसने अपने आपको बादशाह घोषित किया और 'बहादुर शाह' की पदवी धारण की।**
- ☞ मुहम्मद मुअज्जम 1 जून, 1707 को दिल्ली पहुंचा तथा 12 जून, 1707 को आगरा पहुंचा।

परीक्षावलोकन

- ➢ मुगल साम्राज्य के पतन के बाद सबसे शक्तिशाली देशज शक्ति के रूप में उभरे **— मराठे**
- ➢ औरंगजेब की मृत्यु के समय मराठा नेतृत्व हाथों में था **— ताराबाई के**
- ➢ औरंगजेब की 1707 ईस्वी में मृत्यु होने के बाद सत्ता संभाली **— बहादुर शाह प्रथम ने**
- ➢ मुगल सम्राट जहांदार शाह के शासन के 'समय से पूर्व' अंत का कारण था **— एक युद्ध में वे अपने भतीजे द्वारा पराजित हुए**
- ➢ वह मुगल सम्राट, जिसने अंग्रेजों को बंगाल में शुल्क-मुक्त व्यापार की सुविधा प्रदान की थी **— फर्रुखसियर**
- ➢ मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल सम्राट था **— मुहम्मद शाह**
- ➢ नादिर शाह के आक्रमण के समय मुगल शासक था **— मुहम्मद शाह**
- ➢ वह शासक, जिसके शासन में हिजड़ों तथा महिलाओं के एक वर्ग का प्रभुत्व था **— मुहम्मद शाह (1719-48)**

18 जून, 1707 को आगरा से 20 मील दक्षिण सामूगढ़ के समीप **जजाऊ (Jajau) नामक स्थान पर आजम और मुअज्जम के बीच युद्ध हुआ**, जिसमें मुहम्मद आजम मारा गया तथा मुहम्मद मुअज्जम विजयी हुआ। उधर **कामबख्श** जो बीजापुर का सूबेदार था, ने प्रभुता के सभी लक्षणों को धारण करके गुलबर्गा तथा हैदराबाद सहित महत्वपूर्ण स्थानों को विजित कर लिया था।

☞ **13 जनवरी, 1709 को मुअज्जम तथा कामबख्श के बीच हैदराबाद के निकट युद्ध हुआ, जिसमें कामबख्श पराजित हुआ और मारा गया।**

बहादुर शाह प्रथम

(1707-12 ई.)

मुहम्मद मुअज्जम, **'बहादुर शाह प्रथम'** के नाम से 1707 ई. में गद्दी पर बैठा। उसने **समझौते और मेल-मिलाप की नीति** अपनाई। औरंगजेब द्वारा अपनाई गई संकीर्णतावादी तथा कठोर नीतियों को उसने परिवर्तित करने का प्रयास किया। हिंदू सरदारों और राजाओं के प्रति उसने सहिष्णुतापूर्ण नीति अपनाई। उसने आमेर और मारवाड़ (जोधपुर) के राजपूतों पर पहले से अधिक नियंत्रण रखने के उद्देश्य से आमेर की गद्दी पर से **जयसिंह** को हटाकर उसके छोटे भाई विजय सिंह को बिठाया तथा मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया।

मराठा सरदारों के प्रति भी उसकी नीतियां अस्थिर रहीं। उसने मराठों को दक्कन में **सरदेशमुखी** (एक प्रकार का कर) वसूलने का अधिकार दे दिया; किंतु **चौथ** का अधिकार नहीं दिया। बहादुरशाह प्रथम ने **शाहू** को मराठों का क्षत्रपति नहीं माना। इस प्रकार उसने मराठा राज्य पर आधिपत्य के लिए **ताराबाई और शाहू को आपस में लड़ने के लिए छोड़ दिया।**

बहादुर शाह प्रथम ने गुरु गोविंद सिंह के साथ संधि कर **मेल-मिलाप की नीति** अपनाने की कोशिश की; परंतु गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु के पश्चात **बंदा बहादुर** के नेतृत्व में सिक्खों ने विद्रोह प्रारंभ कर दिया। विद्रोह को दबाने के लिए बादशाह ने स्वयं अभियान का नेतृत्व किया। विद्रोहियों ने जल्द ही सतलुज और यमुना के बीच लगभग संपूर्ण क्षेत्र पर नियंत्रण जमा लिया। यद्यपि बादशाह लौहगढ़ तथा अन्य महत्वपूर्ण सिख क्षेत्रों पर कब्जा जमाने में सफल हो गया, फिर भी सिक्खों को दबाया नहीं जा सका।

बहादुर शाह प्रथम ने **बुंदेला सरदार छत्रसाल** से मेल-मिलाप कर लिया। छत्रसाल निष्ठावान सामंत बना रहा। बहादुर शाह प्रथम ने **जाट सरदार चूड़ामन** से भी समझौते की नीति अपनाई।

बहादुर प्रथम शाह के दरबार में वर्ष **1711-12 ई.** में एक डच प्रतिनिधि मंडल **जोसुआ केटेलार** के नेतृत्व में पहुंचा।

बहादुर शाह प्रथम द्वारा अंधाधुंध जागीरें देने तथा पदोन्नति देने के परिणामस्वरूप राज्य की **वित्तीय स्थिति पहले से भी खराब हो गई।** अंततः वर्ष **1712 ई. में बहादुर शाह-I की मृत्यु** के पश्चात मुगल गद्दी का संघर्ष छिड़ गया।

बहादुर शाह प्रथम के चार पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ, जिसमें उसका बेटा **जहांदार शाह विजयी रहा;** क्योंकि उसे उस समय के सबसे शक्तिशाली सामंत **जुल्फिकार खान** का समर्थन मिला।

☞ प्रसिद्ध लेखक **सिडनी ओवन के अनुसार, ''यह अंतिम मुगल सम्राट था, जिसके विषय में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं। इसके पश्चात मुगल साम्राज्य का तीव्रगामी**

परीक्षावलोकन

- वह मुगल बादशाह जो 'रंगीला' के नाम से जाना जाता है **— मुहम्मद शाह**
- बहादुर शाह ने जिसकी सलाह पर शाहू को मुक्त किया था **— जुल्फिकार खां**
- औरंगजेब की मृत्यु हुई थी **– 1707 ई.- अहमदनगर में**
- औरंगजेब के पुत्रों के नाम थे **–मुअज्जम, आजम, कामबक्श**
- बहादुर शाह प्रथम की उपाधि थी **–शाहे बेखबर**
- लौहगढ़ किला का निर्माण करवाया गया **–गुरु गोविंद सिंह द्वारा**
- बहादुर शाह की मृत्यु हुई **–1712 ई.**
- बहादुर शाह-I के पुत्रों के नाम थे**–जहांदार शाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान और जहान शाह**
- कामबख्श की मृत्यु के पश्चात बहादुर शाह ने जिसको दक्षिण की सूबेदारी सौंपी थी **–जुल्फिकार खान**

और पूर्ण पतन मुगल सम्राटों की राजनैतिक तुच्छता और शक्तिहीनता का द्योतक था।''

☞ बहादुर शाह प्रथम की मृत्यु के बाद उसके चारों पुत्रों-जहांदार शाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान और जहान शाह में उत्तराधिकार के लिए युद्ध आरंभ हो गया।

➲ युद्ध के कारण बहादुर शाह प्रथम का शव 15 मई तक दफन नहीं किया जा सका। 15 मई को उसे दिल्ली में दफनाया गया।

➜ उत्तराधिकार के इस युद्ध में ईरानी दल के नेता **जुल्फिकार खान की** सहायता से **जहांदार शाह** सफल हुआ।

मुगल साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी कारणों के रूप में कृषि संकट एवं जागीरदारी संकट की अवधारणा का प्रतिपादन मोरलैंड (Moreland) ने अपनी पुस्तक **'Parties and Politics at the Moghal Court'** में किया है।

जहांदार शाह

(1712-13 ई.)

जहांदार शाह एक कमजोर और पतित अनैतिक चरित्र का शहजादा था। उसमें सद्व्यवहार और शिष्टाचार की कमी थी। जहांदार शाह अपने भाई अजीम-उस-शान, जहान शाह तथा रफी-उश-शान की हत्या कर मुगल बादशाह बना। उसके शासनकाल में प्रशासन वस्तुतः अत्यंत योग्य और कर्मठ **जुल्फिकार खान** के हाथों में था। जुल्फिकार खान वजीर बन गया था। जुल्फिकार खान, औरंगजेब के वजीर असद खान का पुत्र था।

जुल्फिकार खान ने भारतीय असंतुष्ट वर्ग को संतुष्ट करने का प्रयास किया। उसने **राजपूत राजाओं तथा मराठा सरदारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध** स्थापित करने का कार्य किया। उसने जयसिंह को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया। मारवाड़ के **अजीत सिंह को 'महाराजा'** की पदवी दी और **गुजरात का सूबेदार नियुक्त** कर दिया।

जहांदार के समय में घृणित **जजिया कर समाप्त** कर दिया गया। मराठा के शासक को **दक्कन की चौथ और सरदेशमुखी** इस शर्त पर दे दी गई कि उनकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारियों को दे देंगे। जुल्फिकार खान ने **चूड़ामन जाट और छत्रसाल बुंदेला के साथ भी मेल-मिलाप** की नीति अपनाई; परंतु उसने सिक्खों और बंदा बहादुर के प्रति दमन की नीति जारी रखी।

परीक्षावलोकन

- जिस मुगल शासक को **लंपट मूर्ख** भी कहा जाता था **—जहांदार शाह को**
- जहांदारशाह के शासन में प्रशासन की देखरेख थी **— जुल्फिकार खान के हाथों में**
- जिस मुगल वजीर द्वारा जजिया कर को समाप्त कर दिया गया**—जुल्फिकार खान**
- जिसने संगीत पर तुहफुतुल हिंद की रचना की **—मिर्जा मुहम्मद ने**

जुल्फिकार खां ने साम्राज्य की वित्तीय हालत सुधारने के लिए **जागीरों और ओहदों की अंधाधुंध वृद्धि पर रोक** लगा दी। उसने एक गलत नीति भू-राजस्व **इजारा व्यवस्था को बढ़ावा** दिया, जिससे किसानों का शोषण और अधिक हुआ।

अनेक शाही सामंतों ने जुल्फिकार खान के विरुद्ध षड्यंत्र किया। बेईमान कृपापात्र लोगों ने जुल्फिकार खान के खिलाफ बादशाह के कान भरे। स्वस्थ प्रशासन के लिए इससे बढ़कर विध्वंसकारी कार्य और कुछ नहीं हो सकता था।

- **अंत में 11 फरवरी, 1713 को जहांदार शाह की हत्या कर दी गई।**
- फर्रुखशियर सैय्यद बंधुओं (हुसैन अली खान एवं अब्दुल्ला खान) की सहायता से अगले शासक के रूप में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

फर्रुखसियर

(1713-19 ई.)

फर्रुखसियर को अपनी जीत **सैय्यद बंधुओं अब्दुल्ला खान** और **हुसैन अली खान** के कारण मिली; इसलिए अब्दुल्ला खान को **वजीर** का पद और हुसैन अली खान को **मीर बख्शी** का ओहदा मिला। फर्रुखसियर ने **जयसिंह को 'सवाई' की उपाधि** दी।

जोधपुर के राजा अजीत सिंह ने अपनी पुत्री का विवाह फर्रुखसियर से कर दिया। सैय्यद बंधुओं ने फर्रुखसियर के गद्दी पर बैठते ही **जजिया कर तुरंत समाप्त** कर दिया। इसी प्रकार कई जगह से तीर्थयात्रा कर हटा दिए गए। उन्होंने मारवाड़ के अजीत सिंह, आमेर के जयसिंह तथा अनेक राजपूत राजकुमारों को प्रशासन में प्रभावशाली ओहदे देकर अपनी ओर मिला लिया, साथ ही जाट सरदार चूड़ामन से भी दोस्ती कर ली।

फर्रुखसियर के समय में ही **1716 ई. में बंदाबहादुर को दिल्ली में फांसी** दे दी गई। 1717 ई. में ब्रिटिशों को व्यापार में लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से **'शाही फरमान'** जारी कर दिया गया।

सैय्यद बंधुओं ने **मराठा शासक शाहू** के साथ समझौता कर स्वराज्य तथा दक्कन के 6 प्रांतों की **चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार** दे दिया। धीरे-धीरे फर्रुखसियर सैय्यद बंधुओं से ईर्ष्या करने लगा। सैय्यद हुसैन अली ने **1719 ई.** में पेशवा बालाजी विश्वनाथ से **दिल्ली की संधि** करके मराठों से सैन्य सहायता लेकर फर्रुखसियर को अपदस्थ कर अंधा बना दिया तथा कुछ दिन बाद उसकी हत्या कर दी गई।

- फर्रुखशियर की हत्या और मुहम्मद शाह के बादशाह बनने के बीच सैय्यद बंधुओं ने **रफी-उद्-दरजात** और **रफी-उद्-दौला** को मुगल बादशाह बनाया।

रफी-उद्-दरजात

(28 फरवरी - 4 जून, 1719)

- फर्रुखशियर को गद्दी से हटाने के बाद सैय्यद बंधुओं ने रफी-उस-शान के पुत्र **रफी-उद्-दरजात** को गद्दी पर बैठाया।
- जजिया कर को समाप्त कर दिया गया। रफी-उद्-दरजात ने खराब स्वास्थ्य के कारण सैय्यद बंधुओं से अपने भाई के पक्ष में

सिंहासन छोड़ने का आग्रह किया। 4 जून को उसे हरम में भेज दिया गया। 6 जून को उसके बड़े भाई रफी-उद्-दौला को सिंहासन पर बैठाया गया।

☞ 11 जून, 1719 को रफी-उद्-दरजात की मृत्यु हो गई।

➥ रफी-उद्-दरजात का शासनकाल 3 माह, 4 दिन रहा।

☞ **रफी-उद्-दरजात सबसे कम समय तक शासन करने वाला उत्तर मुगलकालीन शासक था।**

रफी-उद्-दौला (6 जून - 17 या 18 सितंबर, 1719) (Rafi-Ud-Daula)

☞ **रफी-उद्-दरजात के बाद सैय्यद बंधुओं ने रफी-उद्-दौला को अगला शासक बनाया।**

➥ उपाधि-शाहजहां द्वितीय, रफी-उद्-दौला का कार्यकाल 3 माह, 11 या 12 दिन तक था।

➥ **रफी-उद्-दौला दूसरा सबसे कम समय तक शासन करने वाला उत्तर-मुगलकालीन शासक था।**

☞ इसके पश्चात सैय्यद बंधुओं ने बहादुर शाह के सबसे छोटे पुत्र खुजिस्ता अख्तर जहान शाह के पुत्र रोशन अख्तर को गद्दी पर बैठाया। इसने मुहम्मद शाह की उपाधि धारण की।

मुहम्मद शाह (1719-48 ई.)

मुहम्मद शाह बहादुर शाह के सबसे छोटे बेटे जहानशाह का पुत्र था। मुहम्मद शाह का लगभग **'तीस साल लंबा शासनकाल'** साम्राज्य को बचाने का आखिरी मौका था। अत्यधिक विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण इसे **'रंगीला' की उपाधि** मिली थी। इसके **शासन काल में सैय्यद बंधुओं का अंत** हुआ।

मुहम्मद शाह के काल में ही **निजामुलमुल्क** ने **हैदराबाद राज्य की नींव** डाली। **सआदत खान** ने **अवध** में अपने राज्य को स्वतंत्र कर लिया। इसी तरह **बंगाल, बिहार** और **उड़ीसा** भी स्वतंत्र हो गए। इसी समय **राजपूताना क्षेत्र भी स्वतंत्र** हो गया। **फारस के शासक नादिर शाह** ने 1739 ई. में मुहम्मद शाह के समय में ही दिल्ली पर आक्रमण किया। **नादिर शाह ने करनाल (1739)** के युद्ध में मुगल सेना को बुरी तरह से हराया। करनाल युद्ध में मुगल सेना का सर्वोच्च कमांडर **मुहम्मद शाह** था। इस प्रकार मुहम्मद शाह के लंबे शासनकाल में अधिकतर प्रांतों ने अपने को स्वतंत्र कर लिया।

नादिर शाह का आक्रमण (1738-1739 ई.)

☞ **मुहम्मद शाह के शासन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी 1739 ई. में नादिर शाह का भारत पर आक्रमण।**

☞ नादिर कुली (नादिर शाह) का जन्म 1688 ई. में खुरासान के तुर्कमान वंश में हुआ था।

☞ **नादिर शाह को 'ईरान का नेपोलियन'** कहा जाता है।

☞ नादिर शाह **सफवी राजा शाह तहमास्प** का मुख्य सेनापति था। 1732 ई. में तहमास्प की मृत्यु होने पर उसका बेटा अब्बास शासक तथा नादिर शाह राज्य संरक्षक (Regent) बना। 4 वर्ष बाद अब्बास की मृत्यु हो गई तथा 26 फरवरी, 1736 को नादिर शाह ईरान का शासक बन गया।

☞ नादिर शाह ने जब **कंधार** पर आक्रमण किया (1737 ई. में कंधार का घेरा डाला, लगभग एक वर्ष बाद मार्च, 1738 में विजय मिली), तो वहां के कुछ अफगानों ने गजनी और काबुल में शरण ली।

☞ नादिर शाह ने अफगान बागियों को शरण न देने के लिए मुगल बादशाह के पास अपना दूत दिल्ली भेजा; किंतु इस दूत और उसके साथियों की मुगल सैनिकों ने **जलालाबाद में हत्या** कर दी। यही **घटना नादिर शाह के भारत पर आक्रमण करने** का मुख्य कारण बनी।

☞ मुहम्मद शाह ने नादिर शाह के तीसरे दूत मुहम्मद खान को वापस जाने नहीं दिया। मुहम्मद शाह के इस व्यवहार को नादिर शाह ने अपना अपमान समझा, जो युद्ध का दूसरा कारण बना।

☞ नादिर शाह ने अपने हिंदुस्तानी अभियान के लिए कंधार का प्रयोग एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में किया था। उसने 31 मई, 1738 को गजनी नगर में प्रवेश किया तथा 19 जून, 1738 को काबुल पर अधिकार कर लिया।

☞ 18 नवंबर, 1738 को नादिर शाह ने पेशावर को बिना प्रतिरोध के विजित किया।

परीक्षावलोकन

- सैयद बंधुओं को 'राजा बनाने वाले' (King-Makers) दरबारी कहा जाता है।
- मुहम्मद शाह को - 'रंगीला बादशाह' कहा जाता था।
- मुहम्मद शाह के समय नादिर शाह ने **1739 ई.** में दिल्ली पर आक्रमण किया।
- नादिर शाह को **ईरान का नेपोलियन** कहा जाता था।
- जजिया को अंतिम रूप से मुहम्मद शाह रंगीला द्वारा हटाया गया।

☞ आगे बढ़ते हुए नादिर शाह ने अटक के स्थान पर सिंध नदी को पार कर लाहौर पर कब्जा कर लिया।

☞ लाहौर के बाद नादिर शाह 5 फरवरी, 1739 को सरहिंद पहुंचा। सरहिंद से वह अम्बाला की ओर चला। अम्बाला से अजीमाबाद और अजीमाबाद से करनाल की ओर कूच किया।

अहमद शाह

मुहम्मद शाह की मृत्यु के पश्चात उसका एकमात्र पुत्र अहमद शाह गद्दी पर बैठा। इसी समय **अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. में भारत पर आक्रमण** किया। इस समय राजकीय कामकाज का नेतृत्व **राजमाता ऊधमबाई** कर रही थीं। अहमद शाह ने **इमामुलमुल्क को वजीर** बनाया तत्पश्चात इमामुलमुल्क ने अहमद शाह को अंधा बनाकर जेल में डाल दिया तथा **जहांदार शाह के पुत्र आलमगीर II** को गद्दी पर बैठाया।

आलमगीर द्वितीय (1754-58 ई.)

इसका नाम **अजीजुद्दीन** था। इसी के शासनकाल में अब्दाली दिल्ली तक पहुंच गया। **प्लासी के युद्ध के समय यही मुगल सम्राट** था।

शाहजहां तृतीय (1758-59 ई.)

आलमगीर की मृत्यु के बाद दिल्ली में **इमामुलमुल्क** ने कामबख्श के पौत्र मुही-उल-मिल्लार को **शाहजहां तृतीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठाया।**

शाहआलम द्वितीय (1759-1806 ई.)

इसका वास्तविक नाम **अलीगौहर** था। इसके

समय ही **पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई. में)** तथा **बक्सर का युद्ध** हुआ और वर्ष **1765 ई.** में **इलाहाबाद की संधि** होती है।

शाह आलम द्वितीय बक्सर के युद्ध में मिली हार के बाद वह कई वर्षों तक इलाहाबाद में ईस्ट इंडिया कंपनी का पेंशनयाफ्ता बनकर रहा। 1772 ई. में मराठों के संरक्षण में ब्रिटिश आश्रय छोड़कर दिल्ली लौटा। **अंग्रेजों ने 1803 ई. में दिल्ली पर कब्जा कर लिया,** 1857 ई. में मुगल वंश की सत्ता अंतिम रूप से खत्म हो गई।

अकबर द्वितीय

(1806-37 ई.)

अकबर द्वितीय ने **राजा राममोहन राय** को **'राजा'** की **उपाधि** दी।

अकबर - II के शासनकाल में मुगल सिक्के लगभग बंद हो गए थे।

परीक्षावलोकन

- आलमगीर-II, ने नवाब खान की उपाधि प्रदान की थी —**फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले को**
- पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.) **–मराठों की हार**
- बक्सर का युद्ध (1764 ई.) **–अंग्रेज विजयी रहे**
- शाहआलम II की हत्या की **–1806 ई. में गुलाम कादिर खान ने**
- 'ईरान का नेपोलियन' किसे कहा जाता है **–नादिर शाह**
- अहमद शाह अब्दाली का वास्तविक नाम **–अहमद खान**
- अहमद ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किया **–8 बार**

बहादुर शाह द्वितीय

(1837-57 ई.)

बहादुर शाह-II (जफर) **अंतिम मुगल सम्राट** था। 1857 ई. के विद्रोह में भाग लेने के कारण अंग्रेजों द्वारा बहादुर शाह जफर को बंदी बना लिया गया, लेकिन कानूनी रूप से मुगल साम्राज्य **1 नवंबर, 1858** को महारानी **विक्टोरिया के घोषणा-पत्र** से समाप्त हो गया। बहादुर शाह जफर को **रंगून** भेज दिया गया, जहां **1862 ई.** में उनकी मृत्यु हो गई।.

उत्तरकालीन मुगल सम्राट का क्रम	
➢ बहादुर शाह प्रथम	(1707–12 ई.)
➢ जहांदार शाह	(1712–13 ई.)
➢ फर्रुखसियर	(1713–19 ई.)
➢ रफी-उद्-दरजात	(28 फरवरी, 1719 से 4 जून, 1719)
➢ रफी-उद्-दौला	(6 जून - 17 सितंबर, 1719)
➢ मुहम्मद शाह	(1719–48 ई.)
➢ अहमद शाह	(1748–54 ई.)
➢ आलमगीर II	(1754–59 ई.)
➢ शाहआलम द्वितीय	(1759–1806 ई.)
➢ अकबर द्वितीय	(1806–1837 ई.)
➢ बहादुर शाह -II (जफर)	(1837–1857 ई.)

मुगल दरबार में दलीय गुटबंदी

- मुगल दरबार कई खेमों में बंटा था, जिनमें चार प्रमुख थे- **तूरानी, ईरानी, अफगानी और हिंदुस्तानी।**

(i) इसमें प्रथम तीन–तूरानी, अफगानी और ईरानी मध्य एशियाई, ईरानी और अफगान

सैनिकों के वंशज थे। इनके वंशज भारत के भिन्न-भिन्न भागों में सैनिक और असैनिक पदों पर नियुक्त थे।

(ii) इसमें तूरानी और अफगानी सुन्नी मत के थे, जबकि ईरानी अधिकतर शिया थे।

(iii) ईरानी दल में असद खान और उसके बेटे जुल्फिकार खान जैसे सरदार थे, जो शिया मत को मानते थे।

(iv) तूरानी दल में चिनकिलिच खान और गाजीउद्दीन फिरोज जंग जैसे सरदार थे, जो इस्लाम के सुन्नी मत के अनुयायी थे।

(v) हिंदुस्तानी दल में वे लोग थे, जिनके पूर्वज भारत में आकर बस गए थे अथवा हिंदू से मुसलमान बन गए थे। इस दल को राजपूत, जाट तथा हिंदू जमींदारों का समर्थन प्राप्त था।

विदेशी आक्रमण

नादिर शाह का आक्रमण–नादिर शाह फारस का शासक था। उसने **1739 ई. में भारत पर आक्रमण** किया। नादिर शाह ने 1738 ई. में गजनी नगर में प्रवेश किया और काबुल पर अधिकार कर लिया। नादिर शाह ने अटक नामक स्थान पर सिंधु नदी पार किया और लाहौर पर अधिकार कर लिया। फरवरी, 1739 में नादिर शाह ने पंजाब पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप मुहम्मद शाह अपने मीर बक्शी खान-ए-दौरान, निजामुलमुल्क तथा सआदत खान आदि को लेकर पंजाब पहुंचा और **करनाल का युद्ध** हुआ। अंत में निजामुलमुल्क की मध्यस्थता के कारण मुहम्मद शाह और नादिर शाह के बीच समझौता हुआ।

मार्च, 1739 में दिल्ली पर नादिर शाह का अधिकार हो गया। नादिर शाह दिल्ली में लगभग 2 माह तक रुका तथा वापस जाते समय अपने साथ **तख्त-ए-ताऊस, कोहिनूर हीरा तथा मुगल खजाना ले गया।**

अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण–नादिर शाह की हत्या 1747 ई. में किए जाने के बाद **अहमद शाह अब्दाली कंधार का स्वतंत्र शासक** बन गया। शीघ्र ही उसने काबुल को जीत लिया और **आधुनिक अफगान राज्य की नींव डाली।**

1748 - 69 ई. के बीच अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर **9 बार आक्रमण** किया। अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण का **उद्देश्य भारत के धन को लूटना** था। 1748 ई. में पंजाब पर प्रथम आक्रमण असफल रहा। 1749 ई. में पुनः आक्रमण किया। 1752 ई. में पंजाब पर तीसरी बार आक्रमण किया। जनवरी, 1757 में वह दिल्ली में प्रवेश कर गया और उसने मथुरा तथा आगरा तक लूटमार की।

- **प्रथम आक्रमण-** दिसंबर, 1747 में अब्दाली पेशावर से भारत पर आक्रमण के लिए आगे बढ़ा। जनवरी, 1748 में लाहौर और सरहिंद पर कब्जा कर लिया; किंतु सरहिंद के पास शाहजादा अहमद शाह के नेतृत्व में मुगल सेना ने अब्दाली को परास्त कर दिया। मुइन-उल-मुल्क को पंजाब का गवर्नर बनाया गया।
- **दूसरा आक्रमण-** दिसंबर, 1749 ई. में अब्दाली ने दूसरा आक्रमण किया और पंजाब के गवर्नर मुइन-उल-मुल्क को परास्त किया। चहार महल (गुजरात, औरंगाबाद, सियालकोट तथा पसरूर) का वार्षिक कर देने के वचन पर अब्दाली वापस लौट गया।
- **तीसरा आक्रमण (1751-52 ई.)–**नियमित रूप से कर न मिलने के कारण अब्दाली ने पंजाब पर तीसरा आक्रमण किया। चार माह के घेरे के बाद मार्च, 1752 में मुइन-उल-मुल्क (मीर मन्नू) पराजित हुआ। कश्मीर, दुर्रानी के साम्राज्य में मिला लिया गया। मुगल बादशाह अहमद शाह ने अहमद शाह अब्दाली को लाहौर और मुल्तान का प्रदेश दे दिया।
- अब्दाली के तीसरे आक्रमण के समय अहमद शाह मुगल बादशाह (1748-54 ई.) था।

- 1753 ई. में मुइन-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद वजीर इमाद-उल-मुल्क ने **अदीना बेग खान** को पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया।
- इमाद-उल-मुल्क ने मुगलानी बेगम को कैद में डाल दिया था।
- मुगलानी बेगम मीर मन्नू की पत्नी थी, जिसे अहमद शाह ने अपने एजेंट तथा पंजाब के गवर्नर के रूप में नियुक्त किया था।

☞ **चौथा आक्रमण–** इमाद-उल-मुल्क द्वारा पंजाब, सिंध को मुगल साम्राज्य में मिलाने के बाद अपने खोए प्रांत को पुनः प्राप्त करने हेतु अब्दाली ने 1756-57 ई. में भारत पर चौथा आक्रमण किया। दिसंबर, 1756 ई. में वह लाहौर पहुंचा तथा जनवरी, 1757 ई. में अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली में प्रवेश कर उसे लूट लिया और साथ-ही-साथ मथुरा तथा आगरा को भी लूटा।

☞ दिल्ली से वापसी के पहले उसने मुगल बादशाह आलमगीर II को कश्मीर, लाहौर, सरहिंद तथा मुल्तान देने के लिए विवश किया। इन क्षेत्रों की देखभाल के लिए अहमद शाह अब्दाली ने अपने बेटे तिमोर या तिमूर या तैमूर शाह (Timor or Timur or Taimur Shah) को नियुक्त किया।

☞ **इसके अतिरिक्त अहमद शाह अब्दाली भारत में आलमगीर द्वितीय को सम्राट, इमाद-उल-मुल्क को वजीर तथा सरदार नजीबुद्दौला को साम्राज्य का मीरबख्शी और अपना एजेंट बनाकर वापस चला गया।**

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

☞ इतिहासकारों के मध्य मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों के प्रश्न पर मत भिन्नता है। इस प्रश्न पर इतिहासकार दो खेमों में बंटे दिखाई पड़ते हैं।

(1) **जदुनाथ सरकार, एस. आर. शर्मा, लेन पूल आदि विद्वानों के अनुसार, औरंगजेब की धार्मिक एवं राजपूत तथा दक्कन आदि नीतियों के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ।**

(2) **सतीश चंद्रा, इरफान हबीब, अतहर अली तथा शीरीन मूसवी आदि विद्वानों के अनुसार, मुगल साम्राज्य के पतन के बीज बाबर के समय से ही उपस्थित थे तथा इन्होंने पतन को दीर्घावधि प्रक्रिया का परिणाम माना है।**

पत्तन में औरंगजेब की भूमिका

1. औरंगजेब की नीतियां–औरंगजेब की **धर्मांधता की नीति** के कारण सिक्खों, जाटों, बुंदेलों, राजपूतों एवं मराठों ने विद्रोह किया।

जजिया कर पुनः लागू करना, **दक्षिण की मूर्खतापूर्ण नीति** आदि मुगल साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुईं।

2. मुगल अभिजात वर्ग का पतन–सम्राटों की देखा-देखी मुगल अभिजात वर्ग ने भी परिश्रमी एवं कठोर सैनिक जीवन छोड़ दिया था।

3. मुगल दरबार में गुटबंदी–मुगल साम्राज्य के अंतिम समय में दरबार में गुटबंदी देखने को मिलती है।

4. सैन्य दुर्बलता–सैनिक अपने मनसबदारों के प्रति ही निष्ठा रखते थे। सैनिकों में **अनुशासनहीनता, विलासपूर्ण जीवन, निष्क्रियता** आदि अवगुण घरकर गए थे।

5. आर्थिक कमजोरियां–आर्थिक और वित्तीय परिस्थितियों की बिगड़ती हुई स्थिति ने मुगल साम्राज्य को खोखला कर दिया था।

6. विदेशी आक्रमण–नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण ने मुगल साम्राज्य को अत्यधिक आघात पहुंचाया।

मुगलों के पतन का प्रभाव/परिणाम

- क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ।
- ब्रिटिश शासन के लिए भारत में द्वार खुल गए।
- कई रियासतें स्वतंत्र हो गईं; जैसे हैदराबाद, अवध, बंगाल आदि।
- विदेशी आक्रमणों के द्वार खुल गए; जैसे नादिर शाह का आक्रमण, अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण आदि।

3 नवीन स्वायत्त राज्यों का उदय

भूमिका

18वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतन के कारण उत्पन्न हुई राजनीतिक अस्थिरता तथा शून्यता को पूरा करने के लिए कई स्वतंत्र व स्वायत्त राज्यों का उदय हुआ; जैसे- **बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर, मराठा और भरतपुर** आदि। भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अंग्रेजों को इन्हीं ताकतों पर विजय प्राप्त करनी पड़ी थी।

हैदराबाद और कर्नाटक

हैदराबाद राज्य की स्थापना **मुहम्मद शाह के शासनकाल** (1719 - 48) में **चिनकिलिच खां** (1724-1748 ई.) ने की। उसने **'निजाम-उल-मुल्क आसफजाह'** की उपाधि धारण की।

निजाम-उल-मुल्क ने सैय्यद बंधुओं के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1720-22 ई. के बीच दक्कन में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। वह 1722-24 ई. तक साम्राज्य का वजीर बना रहा। उसने मुगल सत्ता से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कभी नहीं की; परंतु उसने व्यवहार में स्वतंत्र शासक के रूप में कार्य किया।

निजाम-उल-मुल्क ने **हिंदुओं के प्रति सहनशीलता और उदारवादी नीति** अपनाई। उसने दक्कन में **जागीरदारी प्रथा को शुरू कर** अपनी स्थिति को मजबूत किया। उसने राजस्व व्यवस्था से भ्रष्टाचार को दूर रखने का प्रयास किया।

- 1748 ई. में निजाम-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद हैदराबाद में कोई भी ऐसा योग्य शासक नहीं हुआ, जो उसके द्वारा स्थापित शक्ति की रक्षा कर सके।
- सितंबर, **1798 में हैदराबाद के निजाम ने वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।**
- **हैदराबाद भारतीय राज्यों में ऐसा प्रथम राज्य था, जिसने वेलेजली की सहायक संधि के अंतर्गत आश्रित सेना रखना स्वीकार किया।**

कर्नाटक

मुगल काल में कर्नाटक, हैदराबाद के सूबेदार के अधीन एक सूबा था। स्वतंत्र कर्नाटक सूबे की स्थापना **सादतुल्ला खां (1710 ई.-1732ई.)** ने की तथा अर्काट को अपनी राजधानी बनाया।

बंगाल

बंगाल, भारत का सबसे समृद्ध प्रांत था।

1724 ई. में **सूकरखेड़ा के युद्ध** में चिनकिलिच खान ने **मुबारिज खां** को पराजित किया, तत्पश्चात दक्कन का वायसराय बन गया।

परीक्षावलोकन

- हैदराबाद राज्य की नींव किसने रखी?
  –चिनकिलिच खान (निजाम-उल-मुल्क)
- हैदराबाद राज्य की नींव कब रखी गई?
  –1724 ई. में
- हैदराबाद प्रथम भारतीय रियासत थी, जिसने **सहायक संधि** स्वीकार की।
- मुहम्मद शाह ने आसफजाह की उपाधि किसे दी?
  –निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खान)
- निजाम-उल-मुल्क की मृत्यु हुई**–1748 ई.**
- सूकरखेड़ा का युद्ध हुआ **–1724 ई.**

केंद्रीय सत्ता की कमजोरियों का लाभ उठाकर **मुर्शिद कुली खां** ने स्वतंत्र बंगाल राज्य की स्थापना की नींव रखी।

मुर्शिद कुली खां (1717-1727 ई.)

मुगल सम्राट औरंगजेब ने 1700 ई. में मुर्शिद कुली खां को बंगाल का दीवान बना दिया। **1717 ई.** में **मुर्शिद कुली खां** को बंगाल का सूबेदार बनाया गया। मुर्शिद कुली खां ने अपनी **राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरित** कर दी। इसके समय में तीन विद्रोह हुए-

विद्रोह
- **पहला**–सीतारामराय, उदय नारायण और गुलाम अहमद के नेतृत्व में
- **दूसरा**–शुजात खां के नेतृत्व में
- **तीसरा**–नजात खां के नेतृत्व में

मुर्शिद कुली खान ने नए भू-राजस्व बंदोबस्त के जरिए जागीर भूमि के एक बड़े भाग को खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया तथा भू-राजस्व व्यवस्था की नई प्रणाली **इजारेदारी प्रथा** की शुरुआत की। उसने गरीब किसानों को कृषि विकास तथा भू-राजस्व देने में सक्षम बनाने के लिए **'तकावी ऋण'** प्रदान किया। मुर्शिद कुली खान की मृत्यु 1727 ई. में हुई।

☞ **मुर्शीद कुली खां नाममात्र के लिए मुगल बादशाह की अधीनता को स्वीकार करता था।** वस्तुतः उसने एक स्वतंत्र शासक की भांति व्यवहार किया; किंतु वह मुगल बादशाह को नियमित रूप से वार्षिक कर के रूप में काफी बड़ी रकम भेजता रहा।

शुजाउद्दीन (1727-1739 ई.)

मुर्शिद कुली खान की मृत्यु के बाद उसका **दामाद शुजाउद्दीन** बंगाल का नवाब बना। 1733 ई. में बिहार का कार्यभार भी इसके अधीन आ गया।

☞ शुजाउद्दीन खान के शासनकाल में राज्य की शक्ति कुछ स्वार्थी व्यक्तियों के गुट में एकत्रित हो गई, जिसमें प्रमुख थे-**राय-ए-रायन आलमचंद, जगत सेठ फतेहचंद, हाजी अहमद खां** और **अली वर्दी खां।**

- राय-ए-रायन आलमचंद एक योग्य वित्त विशेषज्ञ थे।
- 1733 ई. में शुजाउद्दीन ने अलीवर्दी खां को बिहार का नायब नाजिम नियुक्त किया था।

☞ शुजाउद्दीन ने राज्य को आर्थिक दृष्टि से संपन्न बनाने का प्रयास किया। मार्च, 1739 में उसकी मृत्यु हो गई।

सरफराज खां (1739-1740 ई.)

☞ सरफराज खां एक अयोग्य और विलासप्रिय शासक था। उसकी इसी दुर्बलता का लाभ उठाकर बिहार के नायब सूबेदार अलीवर्दी खान ने बंगाल को अपने अधिकार में करने का प्रयास किया।

☞ अलीवर्दी खान ने **मुर्शिदाबाद पर आक्रमण किया तथा 1740 ई. में गिरिया के युद्ध में सरफराज खां को परास्त कर उसकी हत्या कर दी।**

- अलीवर्दी के नेतृत्व में हुए इस युद्ध में हाजी अहमद और जगत सेठ भी शामिल थे।

☞ सरफराज खां की हत्या के बाद बंगाल की गद्दी पर अलीवर्दी खान का आधिपत्य हो गया।

➲ उस समय दिल्ली का शासन मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के अधीन था।

☞ अलीवर्दी खां ने मुगल सम्राट मुहम्मद शाह को नजराना देकर बंगाल पर शासन करने की सम्राट की अनुमति प्राप्त कर ली।

अलीवर्दी खां
(1740-56 ई.)

अलीवर्दी खान अपनी सत्ता को स्थायी रूप देने के लिए मुगल सम्राट को **2 करोड़ रुपये का नजराना** भेजा करता था।

मराठों के हमलों से तंग आकर अलीवर्दी खां ने मराठा सरदार रघुजी से 1751 ई. में संधि कर ली, जिसमें उसने मराठों को **उड़ीसा प्रांत और 12 लाख रुपये की वार्षिक चौथ** देने की बात स्वीकार कर ली। बदले में मराठों ने भविष्य में कभी भी बंगाल पर आक्रमण न करने का वायदा किया।

➲ **स्वर्ण रेखा नदी को बंगाल की सीमा स्वीकार किया गया।**

➲ बंगाल पर मराठों का आक्रमण अंग्रेजों के लिए सहायक सिद्ध हुआ; क्योंकि इस आक्रमण के कारण बंगाल का भयंकर विनाश हुआ और नवाब की सैन्य शक्ति कमजोर हो गई।

☞ मराठों के नाम पर अंग्रेजों ने कलकत्ता में अपनी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर ली।

➲ अलीवर्दी खां ने बंगाल में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों द्वारा क्रमशः कलकत्ता और चंद्रनगर में अपनी-अपनी बस्ती की किलाबंदी करने का विरोध किया।

☞ अलीवर्दी खां इस बात से बहुत सतर्क था कि यूरोपीय व्यापारिक कंपनियां बंगाल की राजनीति में हस्तक्षेप न करें। वह यूरोपीय कंपनियों को नियंत्रित रखना चाहता था।

➲ **यूरोपियों के बारे में अलीवर्दी खान ने कहा था कि** ''यदि उन्हें न छेड़ा जाए, तो शहद देंगी और यदि छेड़ा

परीक्षावलोकन

- अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी प्रथम कोठी कब स्थापित की? **–1651 ई. में**
- कंपनी को सूतानाती, कलिकाता तथा गोविंदपुर की जमींदारी कब मिली? **–1698 ई. में**
- मुर्शिद कुली खान बंगाल का दीवान कब बना? **–1700 ई.**
- मुर्शिद कुली खान ने बंगाल की राजधानी ढाका के स्थान पर किसे बनाया? **–मुर्शिदाबाद**
- मुर्शिद कुली खान ने भू-राजस्व व्यवस्था की किस प्रणाली की शुरुआत की? **–इजारेदारी प्रथा**
- अलीवर्दी खान बंगाल का नवाब कब बना? **–1740 ई.**
- मनिहारी का युद्ध **–1756 ई. में शौकत जंग और सिराजुद्दौला के बीच**
- मुगल सम्राट द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम गवर्नर था **–मुर्शिद कुली खान**
- ब्लैक होल की घटना **–20 जून, 1756 ई.**

⇨ अलीनगर की संधि **–9 फरवरी, 1757 ई., सिराजुद्दौला व क्लाइव के बीच**

जाए, तो काट-काट कर मार डालेंगी।''

☞ 1756 ई. में अलीवर्दी खां की मृत्यु हुई।

☞ अलीवर्दी खां के बाद उसका पौत्र सिराजुद्दौला बंगाल का अगला नवाब बना।

सिराजुद्दौला
(1756-1757 ई.)

अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना।

सिराजुद्दौला के समय **ब्लैक होल की घटना** (जून, 1756 ई.) हुई। इसमें **हालवेल** ने बताया कि नवाब ने 20 जून की रात में 146 अंग्रेजों को एक छोटी सी कोठरी में बंद कर दिया, जिसमें से हालवेल सहित मात्र 23 व्यक्ति जिंदा बचे। यह घटना एक अतिशयोक्ति मानी जाती है।

सिराजुद्दौला के समय **प्लासी के युद्ध (1757 ई.)** की पृष्ठभूमि तैयार हुई, इस युद्ध के पश्चात अंग्रेजों ने **कठपुतली नवाबों (मीर जाफर) को बंगाल** का नवाब घोषित कर बंगाल पर मनचाहा अधिकार पा लिया।

मीर जाफर
(1757-1760 ई.)

प्लासी की सफलता के बाद अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया। मीर जाफर ने कंपनी को चौबीस परगना की जमींदारी तथा क्लाइव को लगभग 2,34,000 पाउंड की भेंट उपहार में दी। इसके शासनकाल में हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य का प्रारंभ हुआ, जिसे अंग्रेजों ने प्रोत्साहित कर **बांटो और राज करो की नीति** का सूत्रपात किया। मीर जाफर विद्रोहों को दबा नहीं सका, जिससे वह अपने आंतरिक प्रशासन में भी सफल नहीं रहा।

मीर जाफर से ब्रिटिश कंपनी को जितनी अपेक्षा थी, वह नवाब पूरा नहीं कर पा रहा था।

क्लाइव के जाने के बाद **वैनसिटार्ट बंगाल का स्थायी गवर्नर** बना। इसने 1760 ई. में **मीर कासिम** को बंगाल का नवाब घोषित किया, इस घटना को कुछ विद्वान बंगाल की दूसरी क्रांति की संज्ञा देते हैं।

मीर कासिम
(1760-1763 ई.)

मीर कासिम, अलीवर्दी खां के बाद बंगाल का सबसे योग्य नवाब था। उसने **राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित** किया; जिससे राजधानी में ब्रिटिश हस्तक्षेप कम रहे क्योंकि मुंगेर कलकत्ता से दूर था। उसने **मुंगेर में तोप व बंदूक का कारखाना** स्थापित किया, साथ ही सेना का पुनर्गठन किया।

अंग्रेजों द्वारा दस्तक का दुरुपयोग करने के कारण मीर कासिम ने सभी प्रकार के व्यापार को आंतरिक चुंगी कर से मुक्त कर दिया।

मीर कासिम के समय ही **22 अक्टूबर, 1764 ई. को बक्सर के युद्ध** में बंगाल के **नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय** की संयुक्त सेना का अंग्रेजी सेना से युद्ध हुआ जिसमें अंतिम **विजय अंग्रेजों** की हुई, इस युद्ध के विजय के बाद वास्तविक रूप में भारत में ब्रिटिश वर्चस्व स्थापित हो गया। तत्पश्चात लॉर्ड क्लाइव की मध्यस्थता में **इलाहाबाद की संधि (1765)** हुई, जिसमें ब्रिटिश को बंगाल, बिहार, और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई।

बंगाल के नवाबों का क्रम

- मुर्शिद कुली खान (1717–1727 ई.)
- शुजाउद्दीन (1727–1739 ई.)

- सरफराज खां (1739–1740 ई.)
- अलीवर्दी खां (1740–1756 ई.)
- सिराजुद्दौला (1756–1757 ई.)
- मीर जाफर (1757–1760 ई.)
- मीर कासिम (1760–1763 ई.)
- मीर जाफर (1763–1765 ई.)
- नज्मुद्दौला (1765–1766 ई.)
- शैफ-उद्-दौला (1766–1770 ई.)

अवध

स्वतंत्र अवध सूबे की स्थाना 1722 ई. में सआदत खां (बुरहान-उल-मुल्क) ने की। उसने फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया।

उसने अपनी सरकार के वित्तीय संसाधनों को बढ़ाने के लिए अपनी निजी सेवाएं गठित कीं। 1723 ई. में अवध में नया राजस्व बंदोबस्त लागू किया। उसने उचित भू-लगान लगाकर तथा जमींदारों को अनुशासित कर किसानों की हालत को बेहतर बनाया।

नादिर शाह के खिलाफ साअदत खान ने मुगल बादशाह के साथ युद्ध में भाग लिया।

परीक्षावलोकन

- सफदरजंग का पूरा नाम था **–अबुल मंसूर खां सफदरजंग**
- सफदरजंग की मृत्यु हुई **–1754 ई.**
- सफदरजंग का पुत्र था **–शुजाउद्दौला**
- बनारस की संधि किसके बीच संपन्न हुई? **–शुजाउद्दौला व वारेन हेस्टिंग्स के मध्य**
- फैजाबाद की संधि हुई **–1775 ई. में, आसफुद्दौला और वारेन हेस्टिंग्स के मध्य**
- 1801 ई. में किसने वेलेजली से सहायक संधि स्वीकार की? **–सआदत अली खां**
- लॉर्ड डलहौजी ने किस वर्ष अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया? **–1856 ई.**

सफदरजंग

(1739-1754 ई.)

सफदरजंग, सआदत खां का भतीजा तथा दामाद था। मुगल सम्राट मुहम्मद शाह ने सफदरजंग को अवध का नवाब नियुक्त किया। 1748 ई. में मुगल बादशाह सम्राट अहमद शाह ने उसे अपना वजीर नियुक्त किया; इसी कारण उसे **'नवाब वजीर'** के नाम से जाना जाता था।

शुजाउद्दौला

(1754-1775 ई.)

सफदरजंग की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र **शुजाउद्दौला** अवध का नवाब बना। पानीपत के तृतीय युद्ध में अहमद शाह अब्दाली का साथ शुजाउद्दौला ने ही दिया। शुजाउद्दौला ने बक्सर के युद्ध में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय व बंगाल के नवाब मीर कासिम का साथ दिया। दुर्भाग्यवश ये तीनों ब्रिटिश सैनिकों के सामने विवश हो गए।

आसफुद्दौला

(1775-1797 ई.)

शुजाउद्दौला की मृत्यु के पश्चात अवध का अगला नवाब **आसफुद्दौला** हुआ। इसने अपनी **राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित** कर ली। आसफुद्दौला ने 1784 ई. में मुहर्रम मनाने के लिए **लखनऊ में इमामबाड़ा** बनवाया। जिसका मुख्य वास्तुकार किफायत उल्ला खां था।

वाजिद अली शाह

(1847-1856 ई.)

यह अवध का **अंतिम नवाब** था। इसी के शासनकाल में लॉर्ड डलहौजी ने 1854 ई. में

आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर अवध पर **कुशासन का आरोप लगाकर** 1856 ई. में अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर दिया।

अवध के नवाबों का क्रम

➜ सआदत खां	**1722 – 1739 ई.**
➜ सफदरजंग	**1739 – 1754 ई.**
➜ शुजाउद्दौला	**1754 – 1775 ई.**
➜ आसफुद्दौला	**1775 – 1797 ई.**
➜ वजीर अली	**1797 – 1798 ई.**
➜ सआदत अली खां	**1798 – 1819 ई.**
➜ गाजीउद्दीन हैदर अली खान	**1814 – 1827 ई.**
➜ वाजिद अली शाह	**1847 – 1856 ई.**

केरल

राजधानी — त्रावणकोर

18वीं शताब्दी के मध्य केरल में 4 प्रमुख राज्य थे।

4 प्रमुख राज्य
- ➜ कालीकट
- ➜ चिराक्कल
- ➜ कोचीन
- ➜ त्रावणकोर

1729 ई. के बाद त्रावणकोर राज्य को **राजा मार्तंड वर्मा** के नेतृत्व में प्रमुखता मिली। उन्होंने अपने राज्य के सामंतों को पराजित किया साथ ही केरल से डचों को हराकर उनका राजनीतिक अस्तित्व समाप्त किया। उसने पश्चिमी मॉडल की तर्ज पर अपनी सैन्य क्षमता को मजबूत किया, साथ ही **आधुनिक शस्त्रागार का भी निर्माण** करवाया।

मार्तंड वर्मा के उत्तराधिकारी राम वर्मा के शासन के समय **त्रिवेंद्रम, संस्कृत विद्वता का प्रसिद्ध केंद्र** बन गया। 18वीं शताब्दी में इस क्षेत्र में **'मलयालम साहित्य'** का भी प्रचलन देखने को मिलता है। राम वर्मा स्वयं एक कवि, विद्वान एवं संगीतज्ञ था।

परीक्षावलोकन

- अवध का संस्थापक किसे माना जाता है? **–सआदत खां**
- सआदत खां ने अवध में नया राजस्व बंदोबस्त कब लागू किया? **–1723 ई.**
- सआदत खां की मृत्यु के बाद अवध का नवाब बना **–सफदरजंग**

मैसूर

मैसूर विजयनगर राज्य के अधीन एक सूबा था। **1565 ई. में तालीकोटा के युद्ध** के पश्चात विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया और इसकी कमजोरी का फायदा उठाकर, जिन स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, उनमें मैसूर प्रमुख राज्य था।

1612 ई. में मैसूर में **वाड्यार वंश की** स्थापना हुई। 1704 ई. में मैसूर के **राजा चिक्का देवराज** ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार की। इस वंश का **अंतिम शासक चिक्का कृष्णराज** नाममात्र का शासक था। चिक्का कृष्णराज के शासनकाल में दो प्रमुख मंत्री **नंजराज** एवं **देवराज** थे। धीरे-धीरे नंजराज मैसूर राज्य का सर्वेसर्वा हो गया। नंजराज की सेना में **हैदर अली** भर्ती हुआ, जो अपनी योग्यता के बल पर मैसूर राज्य का प्रधान बन गया।

हैदर अली

1722 ई. में जन्मे हैदर अली ने अपना जीवन मैसूर की सेना में एक साधारण अधिकारी के रूप में प्रारंभ किया। अपनी कौशल क्षमता के कारण 1755 ई. में डिंडीगुल के किले का फौजदार

नियुक्त हुआ। इसने खांडेराव नामक ब्राह्मण को अपना सलाहकार बनाया।

☞ हैदर अली के सत्ता ग्रहण करने के बाद मैसूर राज्य के अनेक सामंत राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। हैदर अली ने इन विद्रोहों को शांत किया तथा **बिदनूर, सूंदी (सुंदा), सेदूर (सेदा), कन्नारा, कोयंबटूर, बारामहल** और **मालाबार तट** पर कब्जा किया। **बल्लारपुर, रायदुर्ग, चित्तलदुर्ग** आदि के सरदारों को अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

हैदर अली ने अपनी सेना को सुसंगठित करने के लिए पाश्चात्य तकनीकों पर भरोसा जताया। अपनी सेना में **फ्रांसीसी अधिकारियों की नियुक्ति** की साथ ही फ्रांसीसियों की सहायता से **डिंडीगुल में आधुनिक शस्त्रागार** भी स्थापित किया।

1761 ई. में हैदर अली ने नंजराज को हटाकर स्वयं को मैसूर का शासक घोषित किया। 1763 ई. में बिदनूर के राजा की मृत्यु के बाद बिदनूर की सत्ता पर हैदर अली ने कब्जा कर वहां अपने व्यक्ति को उपशासक नियुक्त किया। सत्ता के शुरुआत से ही वह मराठा सरदारों, निजाम और अंग्रेजों से लड़ता रहा। दक्कन में भारतीय ताकतों में हैदर अली पहला व्यक्ति था, जिसने अंग्रेजों को परास्त किया।

टीपू सुल्तान

(1782-1799 ई.)

हैदर अली के मृत्यु के बाद उसका पुत्र टीपू सुल्तान मैसूर की गद्दी पर बैठा, जो राजनीतिक दूरदर्शिता में अपने पिता हैदर अली के समान था।

टीपू सुल्तान के कार्य

☞ अपने नाम के सिक्के चलवाए।

☞ वर्षों एवं महीनों के हिंदू नामों के स्थान पर अरबी नाम का प्रयोग किया।

☞ आधुनिक कैलेंडर को लागू किया।

☞ सिक्का ढलाई की नई तकनीक अपनाई।

☞ नाप-तौल के आधुनिक पैमानों का प्रयोग किया।

☞ जैकोबिन क्लब की स्थापना की व उसका सदस्य बना।

☞ **श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष** लगाया।

परीक्षावलोकन

- राजा मार्तंड वर्मा का उत्तराधिकारी बना **–राम वर्मा**
- त्रावणकोर की राजधानी थी **–त्रिवेंद्रम**
- मलयालम साहित्य किस राज्य से संबंधित है? **–केरल**
- तालीकोटा या बन्नीहट्टी का युद्ध किस वर्ष हुआ? **–23 जनवरी, 1565**
- हैदर अली के पिता का नाम क्या था? **–फतेह मुहम्मद मैसूर**
- ब्रिटिश जनरल, जिसने हैदर अली को पोर्टोनोवो के युद्ध में हराया **–सर आयरकूट**
- टीपू सुल्तान ने अपनी राजधानी बनाई **–श्रीरंगपट्टनम में**
- टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम की संधि किसके साथ की? **–अंग्रेजों के साथ**
- वह भारतीय शासक, जिसने विदेशों में आधुनिक पद्धति से दूतावास स्थापित किए थे **–टीपू सुल्तान**

टीपू सुल्तान ने अपने दरबार में हिंदुओं को उच्च स्थान दिया। पूरनिया एवं कृष्णराव इसके दो प्रमुख हिंदू मंत्री थे। शृंगेरी मंदिर में हुए पुनः निर्माण के लिए दान दिया था।

➪ टीपू ने समकालीन विदेशी राज्यों से संबंध स्थापित करने के लिए तुर्की, अरब, फ्रांस, काबुल में दूतमंडल भेजा।

18वीं शताब्दी के स्वतंत्र नवीन राज्य एवं उनके संस्थापक

स्वायत्त राज्य	संस्थापक
➡ हैदराबाद	निजाम-उल-मुल्क (चिनकिलिच खां)
➡ कर्नाटक	सआदतउल्ला खां
➡ बंगाल	मुर्शिद कुली खां
➡ अवध	सआदत खां
➡ मैसूर	हैदर अली
➡ केरल (त्रावणकोर)	मार्तंड वर्मा

रुहेलखंड

रुहेलखंड की **स्थापना अली मुहम्मद खां** ने की। रुहेलखंड हिमालय के तराई क्षेत्र में गंगा तट से कुमाऊं की पहाड़ी तक फैला हुआ उपजाऊ क्षेत्र था।

रुहेलों का अवध, दिल्ली और जाट से लगातार संघर्ष होता रहा। 1773 ई. में रुहेलखंड पर मराठों के आक्रमण के समय अवध के नवाब ने अंग्रेजी सेना की मदद से उन्हें भगा दिया और संधि के तहत धनराशि मांगी।

रुहेल नेता हाफिज रहमत खां द्वारा संधि के नियमों का उल्लंघन करने के कारण अवध ने अंग्रेजों के साथ मिलकर रुहेलों पर आक्रमण कर दिया और अंततः हाफिज रहमत खान मारा गया।

जाट

जाट जमींदारों का समुदाय था, जो मूलतः दिल्ली, आगरा, मथुरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में फैला था।

1700 ई. में **चूड़ामन** ने **भरतपुर राज्य** की नींव डाली। चूड़ामन के बाद उसके भतीजे **बदन सिंह** ने जाटों का नेतृत्व संभाला। अहमद शाह अब्दाली ने बदन सिंह को राजा की उपाधि दी।

बदन सिंह के पश्चात जाटों का नेतृत्व **सूरजमल** ने संभाला। इसे **'जाटों का अफलातून'** भी कहा जाता है। 1763 ई. में सूरजमल की मृत्यु के बाद जाट राज्य का पतन प्रारंभ हो गया।

जाट राज्य के उत्तराधिकारियों का क्रम

चूड़ामन → बदन सिंह→ सूरजमल→ जवाहर सिंह → रतन सिंह → केसरी सिंह → रणजीत सिंह → रणधीर सिंह

रणजीत सिंह

रणजीत सिंह **सुकरचकिया मिसल** से संबंधित थे। मात्र 12 वर्ष की उम्र में ये सुकरचकिया मिसल के प्रमुख बने।

1799 ई. में रणजीत सिंह ने **लाहौर पर अधिकार** कर लिया और लाहौर को अपनी

परीक्षावलोकन

- मीरापुरकटरा का युद्ध कब हुआ?
  –अप्रैल, 1774 ई. में
- नवीन स्वायत्त राज्य रुहेलखंड की स्थापना का श्रेय किसे जाता है?
  –अली मुहम्मद खान
- किस युद्ध में जाट सूरजमल ने मराठों का सहयोग किया?**–पानीपत का तृतीय युद्ध**
- रणधीर सिंह (जाट नेता) ने किस वर्ष अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली?
  -1805 ई.

राजधानी घोषित किया। 1809 ई. में रणजीत सिंह ने कांगड़ा की विजय की। 1813 ई. में कश्मीर को **शाहशुजा (अफगान अमीर)** से अपने संरक्षण में ले लिया और शाहशुजा से सुप्रसिद्ध **कोहिनूर हीरा** प्राप्त किया। 1818 ई. में मुल्तान तथा 1819 ई. में कश्मीर पर भी विजय प्राप्त किया। 1834 ई. तक पेशावर भी सिख राज्य का अंग बन गया।

रणजीत सिंह का प्रशासन

प्रांतीय प्रशासन–सिख राज्य प्रांतों में विभक्त था, प्रांत ही **सूबा** कहलाता था। सूबे का प्रमुख अधिकारी नाजिम होता था। प्रत्येक सूबे, परगने में बंटे थे। परगने, तालुकों में और तालुकों के अंतर्गत 50 से 100 गांव आते थे।

प्रांतीय विभाजन का क्रम

प्रांत (सूबा) →परगना →तालुका → गांव (प्रशासन की सबसे छोटी इकाई)

परीक्षावलोकन

- रणजीत सिंह के राज्य में सम्मिलित था **–श्रीनगर**
- रणजीत सिंह संबंधित थे **–सुकरचकिया मिसल से**
- रणजीत सिंह के राज्य की राजधानी थी **–लाहौर**
- महाराजा रणजीत सिंह ने सुप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा प्राप्त किया था **–अफगान अमीर शाहशुजा से**
- महाराजा रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी थे **-खड्ग सिंह**
- अमृतसर की संधि हुई थी **–अप्रैल, 1809 ई. में**

सैन्य प्रशासन

रणजीत सिंह ने अपने सैन्य क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैन्य तकनीकियों का सहारा लिया। रणजीत सिंह ने अपनी सेना को दो भागों मे बांटा।

(i) फौज-ए-खास–इसके अंतर्गत घुड़सवार, पैदल टुकड़ी एवं तोपखाने आते हैं।

(ii) फौज-ए-बेकवायद–इसमें घुड़सवारों को रखा जाता था, लेकिन उन्हें समय-समय पर ही काम में लाया जाता था।

न्याय प्रशासन

रणजीत सिंह ने अपनी न्याय व्यवस्था से धर्म को दूर रखा, जिससे सभी जातियों को उचित न्याय दिलाया जा सके।

सबसे उच्च पद न्यायालय सूबे में नाजिम का होता था, ग्रामीण विवादों के लिए पंचायत का गठन किया गया था। मृत्युदण्ड का अधिकार केवल राजा के पास होता था।

भू-राजस्व प्रणाली

शुरू में भू-राजस्व व्यवस्था बंटाई प्रथा पर आधारित थी। भू-राजस्व उपज का 33 प्रतिशत से 40 प्रतिशत के बीच होता था। भू-राजस्व की अन्य दो प्रणालियां भी प्रचलन में थीं, कनकूत व्यवस्था और नीलामी योजना।

भू-राजस्व की तीन प्रणालियां
- **बंटाई प्रथा**
- **कनकूत व्यवस्था**
- **नीलामी योजना**

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात पंजाब में नेतृत्व करने वाले राजाओं का क्रम

खड्ग सिंह → नौनिहाल सिंह → शेर सिंह → दिलीप सिंह

4 मराठा साम्राज्य

भूमिका

18वीं शताब्दी के प्रारंभ में मराठा शक्ति के उत्थान की **आधारशिला शिवाजी** के नेतृत्व में देखने को मिलती है। मुगल साम्राज्य के पतन के क्रम में एक शक्तिशाली राज्य मराठा का उदय हुआ।

मराठों का इतिहास

मराठे प्रारंभ में बहमनी राज्य तथा उसके सहायक राज्यों बीजापुर एवं अहमदनगर में अपनी सैन्य सेवाएं देते थे। मराठा राज्य का उद्‌भव शिवाजी के नेतृत्व में 17वीं शताब्दी में प्रारंभ होता है। इस समय मुगल सत्ता पतन के रास्ते पर थी।

मराठा इतिहास को दो चरणों में बांटकर देखा जा सकता है। **पहले चरण** में **शिवाजी, शंभाजी, राजाराम और ताराबाई** के शासन का कार्यकाल शामिल है, **दूसरे चरण** में **पेशवा का** शासन काल सम्मिलित है।

भौगोलिक स्थिति

महाराष्ट्र की जलवायु और मृदा ने मराठा शक्ति को सुदृढ़, परिश्रमी और लड़ाकू बनाया। **महादेव गोविंद रानाडे** ने **'राइज ऑफ द मराठा पॉवर'** में इस भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया है।

धार्मिक स्थिति

इतिहासकारों की धारणा है, कि औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीतियों के फलस्वरूप मराठा शक्ति का उदय हुआ। **भक्ति काल** के **संतों (ज्ञानेश्वर, एकनाथ, रामदास)** की शिक्षा का भी प्रभाव मराठा शक्ति पर पड़ा। गुरु रामदास ने शिवाजी के उत्तराधिकारी व पुत्र शंभाजी को **महाराष्ट्र धर्म** का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजनीतिक स्थिति

मुगल साम्राज्य के विघटन से उत्पन्न राजनीतिक रिक्तता को भरने की शक्ति केवल मराठों में थी। मराठा शक्ति के पास आवश्यक **सैन्य प्रशिक्षण, अनुभवी लड़ाकू जाति** की सैन्य टुकड़ी ने उसकी महत्वाकांक्षा को बढ़ा दिया। अंत में शिवाजी के रूप में मराठा शासक मिला, जिसने मराठा शक्ति को ऊंचाइयां दीं।

शिवाजी

(1627-80 ई.)

'शिवाजी' **भोंसले वंशज** से संबंधित थे। इनका जन्म **19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी के निकट जुन्नार, पुणे** में हुआ था। इनकी **माता का नाम जीजाबाई** तथा **पिता का नाम शाहजी** था। शिवाजी के **बड़े भाई शंभाजी,** शाहजी के साथ बंगलौर की जागीर में रहते थे।

शाहजी भोंसले के मित्र **दादाजी कोंडदेव** शिवाजी के संरक्षक थे। आध्यात्मिक क्षेत्र में शिवाजी के आचरण पर **गुरु रामदास** का काफी प्रभाव था। शिवाजी का पहला **विवाह साईबाई निम्बालकर** से 1640-41 ई. में हुआ। 1656 ई. में शिवाजी ने **रायगढ़** को अपनी राजधानी बनाया।

शिवाजी के विजय अभियान

अफजल खां से संघर्ष (1659 ई.)

1659 ई. में यह संघर्ष बीजापुर के सरदार अफजल खां व शिवाजी के बीच प्रारंभ हुआ। शिवाजी की तरफ से मराठा सेना का नेतृत्व **मोरो पिंगले** और **नेताजी पालकर** कर रहे थे शिवाजी ने अफजल खां की उसके शिविर में

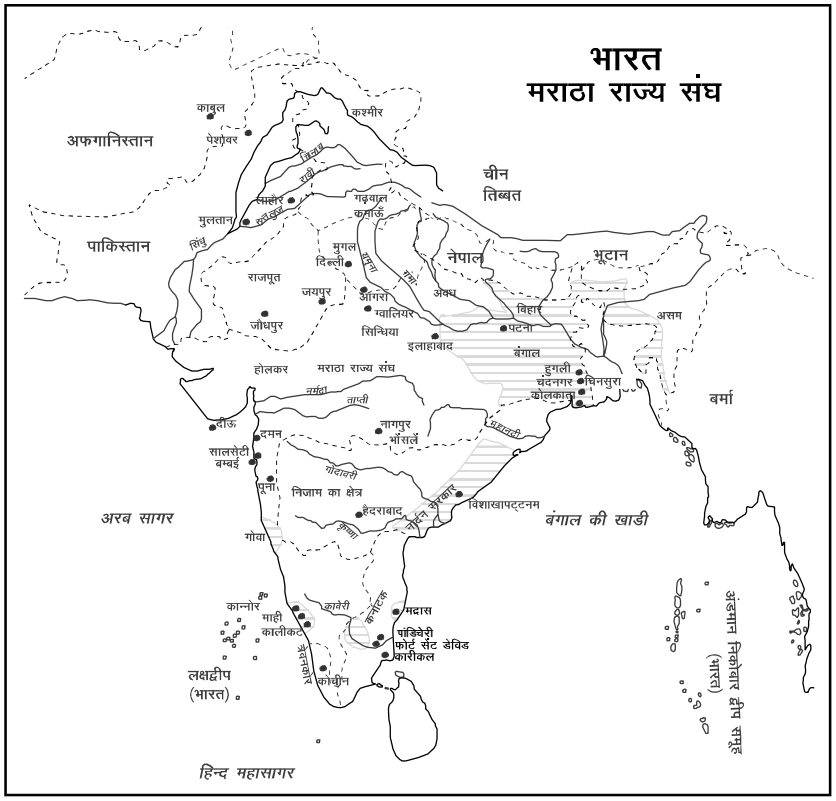

बघनखा (**हाथ में पहनने वाला हथियार**) से उसकी हत्या कर दी।

शाइस्ता खां से संघर्ष (1660-1664 ई.)

मराठा शक्ति की दक्षिण में बढ़ती दावेदारी देखकर जुलाई, 1659 ई. में औरंगजेब ने अपने मामा **शाइस्ता खां** को दक्षिण का सूबेदार बनाया। शाइस्ता खां ने बीजापुर राज्य की मदद से मराठों के विरुद्ध कुछ संघर्षों में सफलता प्राप्त की। साथ ही उसने शिवाजी से चाकन, उत्तरी कोंकण समेत कुछ किले पर विजय पाने में सफलता पाई।

अप्रैल, 1663 में शिवाजी ने पूना में शाइस्ता खां के निवास स्थान पर आक्रमण कर शाइस्ता खां और उसके पुत्र फतेह खां को पराजित किया।

शिवाजी एवं मिर्जा राजा जय सिंह का संघर्ष

औरंगजेब ने आमेर के **मिर्जा राजा जयसिंह** को मराठा शक्ति के दमन के लिए दक्षिण भेजा। जयसिंह ने पुरंदर का किला जीत लिया, जून 1665 ई. में शिवाजी तथा मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य पुरंदर की संधि हुई।

पुरंदर की संधि (22 जून, 1665)

शिवाजी और राजा जयसिंह के बीच पुरंदर की संधि हुई। इस संधि की कुछ शर्तें थीं।

- ☞ शिवाजी अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को दे देंगे।
- ☞ 'शिवाजी' मुगल की तरफ से युद्ध एवं सेवा करेंगे।

परीक्षावलोकन

- शिवाजी का जन्म हुआ था **–19 फरवरी, 1630**
- शिवाजी किस वंश से संबंधित थे? **–भोंसले वंश**
- पोलीगर का युद्ध कब और किसके बीच हुआ था? **–1654 ई. में शंभाजी व अप्पा खां के बीच**
- शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे **–गुरु रामदास**
- शाहजी भोंसले (शिवाजी के पिता) की दूसरी पत्नी का नाम था **–तुकाबाई मोहिते**

☞ शिवाजी के उत्तराधिकारी शंभाजी को मुगल दरबार में 5000 का मनसब दिया जाएगा।

मई, 1666 में जब शिवाजी आगरा के दरबार में पहुंचे, तो वहां शिवाजी के साथ **5000 के मनसबदार** जैसा व्यवहार किया गया, जो शिवाजी को पसंद नहीं आया। परिणामस्वरूप शिवाजी को **'जयपुर महल' में बंदी** बना लिया गया। एक योजना के तहत अगस्त, 1666 में शिवाजी आगरा से निकलकर रायगढ़ वापस आ गए। 1668 ई. में शिवाजी ने औरंगजेब के साथ एक संधि की। इसी समय औरंगजेब ने शिवाजी को 'राजा' की उपाधि से सम्मानित किया, साथ ही **बीजापुर और गोलकुंडा की 'चौथ'** वसूलने का अधिकार भी दे दिया।

शिवाजी का राज्याभिषेक

6 जून, 1674 को शिवाजी ने रायगढ़ में काशी के प्रसिद्ध **विद्वान श्री गंगाभट्ट** द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया। गंगाभट्ट काशी के सम्मानित ब्राह्मण थे। शिवाजी ने राज्याभिषेक के अवसर पर **एक नया संवत् चलाया, सोने तथा तांबे के सिक्के जारी किए जिस पर 'श्री शिवा छत्रपति'** उत्कीर्ण करवाया।

कर्नाटक अभियान

(1676-78 ई.)

यह शिवाजी का **अंतिम विजय अभियान** था। शिवाजी ने 1677 ई. में येलवर्गा पर और 1678 ई. में जिंजी के किला पर अधिकार कर लिया। **जिंजी की विजय** शिवाजी की अंतिम विजय थी।

शिवाजी के शासनकाल की घटनाएं (कालक्रमानुसार)

घटनाएं	वर्ष
→ अफजल खां से संघर्ष	**1659 ई.**
→ शाइस्ता खां से संघर्ष	**1663 ई.**
→ सूरत की प्रथम लूट	**1664 ई.**
→ पुरंदर की संधि	**1665 ई.**
→ शिवाजी का राज्याभिषेक	**6 जून, 1674 (पहली बार)**
→ शिवाजी का राज्याभिषेक	**24 सितंबर 1674 (दूसरी बार)**

शिवाजी का प्रशासन

शिवाजी के प्रशासन में हिंदूवादी दृष्टिकोण पर अधिक बल दिया गया। इनके प्रशासन में 8 मंत्रियों की एक परिषद होती थी, जिसे **अष्टप्रधान परिषद** कहा जाता था। अष्टप्रधान में प्रत्येक विभाग में एक मंत्री होता था, जिसकी नियुक्ति शिवाजी स्वयं करते थे। अष्टप्रधान में **पेशवा का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण** एवं **सम्मान** का होता था।